Harigopāla (Upādhyāya)
Pādhy

नवल किशोर प्रेस, लखनऊ

1881

भूमिका

प्रकट होय कि हिन्दी भाषा के व्याकरण पर कई एक ग्रन्थ बने हैं, एक आदम साहब कृत व्याकरण, दूसरा भाषा चन्द्रोदय, तीसरा भाषा तत्वबोधिनी, यद्यपि इन ग्रंथों में सामान्यत: विवेचन अच्छी प्रकार किया है तथापि कईएक स्थलों में अशुद्धता, न्यूनता, अप्रयोजनता देखकर, बहु विद्या निपुण, गुणग्राहक, दयानिधान, परोपकारक, मध्य देश के पौरजान पदीय शालोपदेशक श्रीयुत कालिन्ब्रोनिङ्ग साहब एम० ए० इन्स्पेक्टर जनरल वोरिश ने निर्द्दोष, उत्तम, व्याकरण की रचना के निमित्त, सागर हैस्कूल के संस्कृत प्रोफ़ेसर पण्डित हरिगोपालोपाध्याय बी० ए० को यथा विधि अपने इस रचना के सङ्कल्प से प्रबुद्ध कर साधन भूत दो तीन पुस्तकें कृपा कीं; और पूर्वोक्त उपाध्याय जी ने उनकी गुणग्राहकता से आनन्दित होय बहु परिश्रम से फार्बेस साहब कृत व्याकरण, डादो साहब कृत मरहटी व्याकरण, हार्वर्ड कृत, अर्नोल्ड कृत ग्रंथ, मोरेल कृत वाक्य पृथक्करण और एथरिङ्गटन साहब कृत व्याकरण आदि ग्रंथों के सविचारावलोकन रूप मथन से सारांश भूत नवनीत निकाल यथामति भाषा तत्वदीपिका रच कर गत तीन वर्ष के अवसर में कि उक्त श्रीयुत, कालिनब्रोनिङ्ग साहब एम० ए० अवध देशीयपाठशालाध्यक्ष वोरिश हैं नीराजन किया; और श्री महाराजा ने अति आनन्दित होय, अवध देश, पश्चिमोत्तर देश और मध्यदेशादि में इसको प्रकाशित और प्रचार कराय ग्रंथकार को पारि-तोषिकादि प्रतिष्ठा से परिश्रम सफल कराया; परन्तु महाशय वोरिश को अवध देशीय यात्रामें विद्यार्थियोंकी परीक्षा और विद्वज्जनों के परिभाषण, समागम से इस ग्रन्थ के किसी २ स्थल में काठिन्यतादि विदित हुईं और व्याकरण के चतुर्थ भाग छन्दो बोधका भी अति अनुराग हुआ तो ग्रंथ-कार से इसकी संक्षेप रचना का अभिप्राय प्रकट किया; जोकि उनको

कार्य्योन्तरासक्त होने से इस अवसर में सावकाश न था महाशय से प्रार्थना की कि आपही कृपा करें ॥

इस कारण महाशय की अनुमति से पण्डित देवीप्रसाद हेडमास्टर मायडल स्कूल अमीनाबाद की द्वारा यह ग्रन्थ अगम्य कठिन-स्थलों से निर्द्वन्द्व और छन्दोबोध से अलङ्कृत होय विद्यार्थियों के उपकार के लिये पुनः मुद्रित हुआ यही अब पश्चिमोत्तर व अवधदेश की पाठशालाओं के इन्स्पेक्टर बीरेश की आज्ञानुकूल छापा गया—निश्चय है कि विद्वज्जन अंगीकार करें ॥

आज्ञा ॥

जो कि यह पुस्तक सर्व साधारण है अर्थात् नार्मल तहसीली और देहाती सब पाठशालाओं में व्याकरण का बोधक है इसलिये महाशय बीरेश की आज्ञा है कि देहाती और तहसीली शाला के पाठक विद्यार्थियों का अधिकार देखकर सन्धि, समास आदि प्रकरणों को ग्रंथकी परिसमाप्तिमें पढ़ावें और छन्दोबोध की देहाती में आवश्यकता नहीं ॥

इति

सूचीपत्र ॥

इति

श्री सच्चिदानन्द मूर्त्तये नमः ॥

भाषा तत्वदीपिका

अर्थात्

हिन्दी भाषा का व्याकरण ॥

व्याकरण का लक्षण और उसके भाग ॥

प्रश्न व्याकरण क्या है और उससे क्या लाभ होता है ?

उत्तर व्याकरण एक शास्त्र है कि जिससे शुद्ध बोलने और लिखने का ज्ञान होताहै ॥

प्र० इस शास्त्र के मुख्य भाग कौन २ हैं ?

उ० **वर्ण विचार, शब्द विचार, वाक्य रचना, और छन्दोरचना** ये चार भाग हैं ॥

---

१ पाठ

वर्ण विचार और वर्णों की गणना ॥

प्र० वर्ण विचार में किसका वर्णन कियाजाता है ?

उ० वर्ण विचार में वर्णोंका **लक्षण, संयोग, उच्चारण स्थान, और सन्धि** इनका वर्णन कियाजाता है ॥

प्र० वर्णों के कितने भेद हैं ?

उ० **स्वर और व्यंजन** ये दो भेद हैं ॥

प्र० स्वर किन वर्णों को कहते हैं ?

उ० स्वर उन वर्णों को कहतेहैं कि जो केवल आपही बोले जांय,

और उनको संस्कृत में अच् कहतेहैं; जैसा अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, ऌ*, ए, ऐ, ओ, औ, इन तेरह अक्षरों को स्वर कहते हैं ।

प्र० व्यञ्जन किनको कहतेहैं?

उ० व्यञ्जन उनको कहते हैं कि जिनका उच्चारण स्वरों की सहायता बिना न होसके, और उनको संस्कृत में हल् कहते हैं ।

	व्यञ्जन	संज्ञा.		व्यञ्जन	संज्ञा.
१	क् ख् ग् घ् ङ्	कवर्ग.	२	च् छ् ज् झ् ञ्	चवर्ग.
३	ट् ठ् ड् ढ् ण्	टवर्ग.	४	त् थ् द् ध् न्	तवर्ग.
५	प् फ् ब् भ् म्	पवर्ग.	६	य् र् ल् व्	अन्तस्थवर्ण.
७	श् ष् स् ह्	ऊष्मवर्ण.			

इन ३३ अक्षरों को व्यञ्जन कहते हैं और इनका स्पष्ट उच्चारण स्वरके योग से, होता है जैसा, क्+अ=क, अ+क्=अक् इत्यादि ।

इन व्यञ्जनों में (अ) मिलाकर शिक्षक लोग व्यञ्जन बतलाते हैं, जैसा क, ख, ग, घ, ङ, इत्यादि । इस तरह से व्यञ्जन बताने में कुछ हानि नहीं, पर व्यञ्जनों के मूल रूप में अ केवल स्पष्ट उच्चारण के लिये जोड़ा जाता है, यह ध्यान में रखना चाहिये + ।

---

२ पाठ

स्वरों के भेद ।

प्र० स्वरों में कौन २ ह्रस्व, कौन २ दीर्घ, वा संयुक्त हैं ?

उ० अ इ उ ऋ ऌ ये पांच ह्रस्व हैं,

आ ई ऊ ॠ ये चार दीर्घ हैं,

ए ऐ ओ औ ये चार संयुक्त हैं और दीर्घ भी कहाते हैं, इनको संयुक्त कहने का कारण सन्धि प्रकरण में स्पष्ट किया जायगा ।

---

* ॡ यह अक्षर देवनागरी वर्णमाला का नहीं है, संस्कृत ग्रन्थ में भी यह अक्षर कभी नहीं आता, फिर हिन्दी में कहां से आवेगा ? इसलिये ॡ वर्ण को यहां नहीं लिया ॥

\+ किसी वस्तु के आगे कार जोड़ने से वह अक्षर समझा जाता है जैसा अकार कहने से अ समझाते हैं ।

इन में से अ इ उ ऋ लृ ए ऐ ओ औ ये मूल स्वर अथवा प्रधान स्वर कहाते हैं ॥

प्र० स्वरों का और कोई भेद है ?

उ० स्वरों का तीसरा भेद प्लुत है; **ह्रस्व दीर्घ** और **प्लुत** ये भेद मात्रा से होते हैं, और मात्रा का अर्थ परिमाण अर्थात् उच्चारण काल का मापना जाना जाता है ॥

प्र० मात्रा किसको कहते हैं ?

उ० ह्रस्व स्वर के उच्चारण में जो काल लगता है उसे एक मात्रा कहते हैं, और दीर्घ स्वर के उच्चारण में ह्रस्व से दूना काल लगता है और प्लुत के उच्चारण में तिगुना काल लगता है, इसी से ह्रस्व को **एक-मात्रिक** दीर्घ को **द्विमात्रिक** और प्लुत को **त्रिमात्रिक** कहते हैं ॥

प्र० प्लुत का उच्चारण किस जगह होता है ?

उ० जहां किसी को दूर से पुकारते हैं वहां प्लुत बोला जाता है; जैसा अय कृष्णा ३ कृष्णारे ३, यहां कृष्ण शब्द के अंत्य स्वर को और अरे के अंत्य एकार को प्लुत बोलते हैं और उसकी पहचान के लिये ३ का अंक लिख देते हैं ॥

प्र० स्वर निरनुनासिक वा सानुनासिक हैं या नहीं ?

उ० सब स्वर निरनुनासिक और सानुनासिक के भेद से दो प्रकार के होते हैं ॥ जिनका उच्चारण केवल मुख से होवे वे निरनुनासिक, जैसा अ आ, और जो नासिका सहित मुख से बोले जांय, वे सानुनासिक जैसा अँ आँ, इ० ॥ सानुनासिक का चिन्ह ँ यह है ॥

प्र० अनुस्वार और विसर्ग किनको कहते हैं ?

उ० नासिका से जिसका उच्चारण होता है और जिसको बताने के लिये स्वर के सिर पर (ं) ऐसा चिन्ह करते हैं उसे अनुस्वार जानो, अनुस्वार का उच्चारण स्वर के उच्चारण के पश्चात् होता है, स्वर के आगे जो (:) ऐसा दो बिंदुओं का चिन्ह लिखा जाता है, उसे विसर्ग कहते हैं, और कंठ से यह बोला जाता है, इससे स्पष्ट है कि इन दोनों चिन्हों का

उच्चारण स्वर के साथ होनेसे दो प्रकार के रूप हुए जैसे अ; अं अः, इ इं इः ।

प्र० हिन्दी भाषा में कौन स्वर आते हैं ?

उ० ॠ ऌ ॡ इन तीनों को छोड़ शेष दश स्वर हिन्दी भाषा में आते हैं और ये तीन केवल संस्कृत में आते हैं

---

२ पाठ

वर्ण माला ।

प्र० व्यञ्जन के साथ स्वर मिलने से कैसा रूप बनता है ?

उ० व्यञ्जनके साथ स्वर मिलने से वर्णमाला बनती है, पर इस मेल में अ को छोड़ शेष स्वरों के रूप बदल जाते हैं । स्वरके (ा) इस रूपान्तर को मात्रा कहते हैं, ये मात्रा रूप व्यञ्जन को जोड़ने से वर्णमाला बनजाती है ।

जैसा व्यञ्जन को स्वर की मात्रा मिलने से सिद्ध अक्षर हुआ है ।

क्	अ	-	क
क्	आ	ा	का
क्	इ	ि	कि
क्	ई	ी	की
क्	उ	ु	कु
क्	ऊ	ू	कू
क्	ऋ	ृ	कृ
क्	ॠ	ॄ	कॄ
क्	ऌ	ॢ	कॢ
क्	ए	े	के
क्	ऐ	ै	कै
क्	ओ	ो	को
क्	औ	ौ	कौ
क्	अं	ं	कं
क्	अः	ः	कः

प्र० व्यञ्जनों में से कौन २ व्यञ्जन हिन्दी में नहीं आते हैं ?

उ० ङ ञ ण ष ये चार नहीं आते केवल संस्कृत में आते हैं, परंतु हिन्दी भाषामें संस्कृत शब्द बहुत मिलेहैं इस लिये इनका जानना अवश्यहै ॥

---

४ पाठ

संयुक्त अक्षर

प्र० संयोग किसे कहतेहैं ?

उ० दो अथवा तीन आदि व्यंजनों के मिलने को संयोग कहतेहैं जैसा, शब्द, माहात्म्य, यहां ब् द का संयोग और त् म् य का संयोग जानो, ऐसे अक्षरों को संयुक्ताक्षर कहतेहैं ।

प्र० संयुक्ताक्षर कैसे लिखा जाता है ? +

उ० संयुक्ताक्षर सामान्यतः ऐसा लिखा जाताहै कि पहिले व्यंजन में का ना न होवे तो उसका आधा रूप लिखकर उसके नीचे या कभी २ आगे जैसा द् + य,=द्य, ड् + य = ड्य और का ना होवे तो गिराकर उस वर्णके आगे दूसरा स्वर युक्त अक्षर पूरा लिखा जाता है ङ्+ग=ङ्ग, ग्+म=ग्म, इत्यादि ॥ दूसरे वर्ण में स्वर न होवे तो उसका भी पूर्वोक्त रीति से आधारूप लिखकर तीसरा स्वरयुक्त वर्ण लिखतेहैं जैसा त्+म्+य= त्म्य, ल्+प्+य=ल्प्य इत्यादि; ङ छ ट ठ ड ढ ये अक्षर संयोग की आदि में संपूर्ण लिखे जाते हैं ॥ जैसा ट्म, ड्ड, ढ्ढ इ० ॥ और क्ष और ज्ञ को मूल व्यंजनों में गिनतेहैं, पर ये अक्षर संयुक्त हैं, क्योंकि क् और ष मिल

+ वर्णमाला के अक्षर दो स्वरूप के लिखे जाते हैं (१) खड़ी पाई संयोग यथा ख, ग, घ, च, ज, झ, ञ, ण, त, थ, ध, न, प, फ, ब, भ, म, य, ल, व, श, ष, स, और (२) बिना खड़ी पाई के जैसा क, छ, ड, ट, ठ, ड, ढ, द, र, ह, खड़ी पाई के अक्षर जब किसी अक्षर में मिलते हैं तो वे अपने आधे स्वरूप से मिलते हैं परंतु अन्त के अक्षर का स्वरूप पूराही बना रहता है जैसे स्पष्ट शब्दमें दोनों रूप दिखाई देते हैं, और बिना खड़ी पाई के र को छोड़ सब अक्षर जब किसी अक्षर में मिलतेहैं तो वे अपने पूरेही रूपमें लिखे जाते हैं, जैसे पुट्ठा परंतु र सदैव आधे रूपसे लिखा जाता है जैसे वर्ण आदि, [illegible] अक्षर अपने वर्ग में मिलता है ॥

क्षर क्ष, ज्+ञ=ज्ञ बने हैं, इसलिये इनको संयुक्ताक्षर कहना चाहिये ।

प्र० र् का संयोग कैसे होताहै ?

उ० जिस व्यंजन में काना नहीं है उसके नीचे (्) ऐसा चिन्ह लगाते हैं जैसा ड्र क्र इत्यादि; और कानावाले व्यंजन को (्) ऐसा चिन्ह जोड़ते हैं जैसा प+र=प्र, और कभी दूसरे अक्षर के आदि में मिले तो उसके सिरपर ऐसा (र्‍) चिन्ह करते हैं और उसे रेफ बोलते हैं जैसा गर्भ वर्ण सर्व इत्यादि ।

प्र० (श) को व्यंजन में जोड़ना होवे तो कैसा लिखते हैं ?

उ० (श, श्, इन दोनों रूपों से मिलाते हैं जैसा प्रश्न प्रश्न ।

---

५ पाठ

स्थान विचार ।

प्र० वर्णों का उच्चारण स्थान किसे कहते हैं ?

उ० मुखके जिस भाग से जिन वर्णों का उच्चारण होवेगा, उसी भाग को उन वर्णोंका स्थान कहते हैं ।

प्र० किन २ अक्षरों के कौन २ स्थान हैं ?

उ० अ आ क ख ग घ ङ ह और विसर्ग इनका कंठ स्थान है और कंठ्य कहलाते हैं ।

इ ई च छ ज झ ञ य श ये तालु से बोले जाते हैं और तालव्य कहाते हैं ।

ऋ ॠ टवर्ग र ष ये मूर्द्धा अर्थात् तालु से कुछ ऊपर जीभ लगाने से बोले जाते हैं और मूर्द्धन्य कहाते हैं ।

लृ तवर्ग ल स इन का दन्त स्थान है और दंत्य कहलाते हैं ।

उ ऊ पवर्ग इनका ओष्ठ स्थान है और ओष्ठ्य कहाते हैं ।

ए ऐ कंठ और तालुसे बोले जाते हैं और उनको कंठ तालव्य कहते हैं ।

ओ औ कंठ और ओष्ठ से बोले जाते हैं और कंठोष्ठ्य कहाते हैं

वकार दांत और ओष्ठ से बोला जाता है और दन्तोष्ठ्य कहाता है ।

ङ ञ ण न म ये स्ववर्गोक्त स्थान और नासिका से बोले जाते हैं और अनुनासिक कहाते हैं।

---

६ पाठ

संधि विचार

स्वर संधि।

* यह सन्धि प्रकरण संस्कृत भाषा के व्याकरण का भाग है; शुद्ध हिन्दी में सन्धि नहीं होती है; पर हिन्दी में संस्कृत शब्द बहुत हैं और तुलसी दास कृत-रामायणादि ग्रंथों में सन्धियां बहुतसी आती हैं, इसलिये मुख्य २ नियम जानना अवश्य है।

प्र० संधि किसे कहते हैं?

उ० दो वर्ण परस्पर निकट आकर एकरूप से वा रूपान्तर से मिले तो उस मेल को संधि कहते हैं।

प्र० संधि कितने प्रकार की है?

उ० स्वरसंधि और व्यञ्जन संधि ये दो प्रकार हैं।

प्र० स्वरसंधि और व्यञ्जन संधि किनको कहते हैं?

उ० दो स्वरों की सन्धिस्वरसंधि कहाती है; व्यंजन और स्वर की सन्धि, वा दो व्यंजनों की व्यञ्जन सन्धि कहाती है।

प्र० स्वरसन्धि किस प्रकार से होती है?

उ० अ इ उ ऋ ह्रस्व अथवा दीर्घ इनके परे सजातीय ह्रस्व वा दीर्घ स्वर यथा क्रमसे आवें तो दोनों मिलकर दीर्घ आदेश होता है। जैसा

अ वा आ + अ वा आ = आ	इ वा ई + इ वा ई = ई
उ वा ऊ + उ वा ऊ = ऊ	ऋ वा ॠ + ऋ वा ॠ = ॠ

---

* शिक्षक को उचित है कि इस प्रकरण को पुस्तक के अन्त में विचार पूर्वक सिखावें।

उदाहरण

मूलस्थिति	सिद्धरूप	मूलस्थिति	सिद्धरूप
ज्ञान + अभाव	=ज्ञानाभाव	धर्म + आज्ञा	=धर्माज्ञा
गङ्गा + अर्पण	=गङ्गार्पण	सीता + आश्रय	=सीताश्रय
हरि + इच्छा	=हरीच्छा	करी + इन्द्र	=करीन्द्र
भानु + उदय	=भानूदय	भू + ऊर्ध्व	=भूर्ध्व
पितृ + ऋण	=पितॄण इत्यादि		

प्र० विजातीय स्वरों की संधि कैसी होती है ?

उ० अ अथवा आ इनके आगे इ अथवा ई आवे तो दोनों मिलकर ए आदेश होता है; इसी तरह उ वा ऊ आवे तो ओ; ऋ वा ॠ आवे तो अर्; लृ होवे तो अल्; ए वा ऐ आवे तो ऐ; ओ वा औ होवे तो औ; आदेश होते हैं ॥ जैसा

अ वा आ + इ वा ई=ए	अ वा आ + उ वा ऊ=ओ
अ वा आ + ऋ वा ॠ=अर्	अ वा आ + लृ=अल्
अ वा आ + ए वा ऐ=ऐ	अ वा आ + ओ वा औ=औ

उदाहरण

देव + इन्द्र	=देवेन्द्र	रमा + ईश	=रमेश
सूर्य + उदय	=सूर्योदय	महा + ऊर्मिला	=महोर्मिला
महा + ऋषिः	=महर्षिः	तव + लृकार	=तवल्कार
एक + एक	=एकैक	महा + ऐश्वर्य	=महैश्वर्य
चित्त + औदार्य्य	=चित्तौदार्य्य	गंगा + ओघ	=गंगौघ इत्यादि

प्र० स्वरों में से अ आ को छोड़ कर बाकी स्वरों के परस्पर आगे पीछे होने से कैसी संधि होती है ?

उ० इ वा ई, उ वा ऊ, ऋ वा ॠ, लृ, इनके परे विजातीय स्वर होवे तो य् व् र् ल ये आदेश पूर्व इकारादिकों के स्थान में क्रम से होते हैं ॥

इ वा ई + { अ वा आ = य वा या
उ वा ऊ = यु वा यू
ऋ वा ॠ = यृ वा यॄ
ए वा ऐ = ये वा यै
ओ वा औ = यो वा यौ }

उ वा ऊ + { अ वा आ = व ० वा
इ ० ई = वि ० वी
ऋ ० ॠ = वृ ० वॄ
ए ० ऐ = वे ० वै
ओ ० औ = वो ० वौ }

ऋ वा ॠ + { अ वा आ = र वा रा
इ ० ई = रि ० री
उ ० ऊ = रु ० रू
ए ० ऐ = रे ० रै
ओ ० औ = रो ० रौ }

ऌ० + { अ ० आ = ल ० ला
इ ० ई = लि ० ली
उ ० ऊ = लु ० लू
ए ० ऐ = ले ० लै
ओ० औ = लो ० लौ }

उदाहरण

प्रति + उत्तर = प्रत्युत्तर　　सु + आगत = स्वागत
देवी + आश्रय = देव्याश्रय　　मनु + अन्तर = मन्वन्तर
पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा　　ऌ + आकृति = लाकृति

ए, ऐ, ओ, औ, से परे कोई स्वर आवे तो उनके स्थान में क्रम से अय्, आय्, अव्, आव्, आदेश होते हैं, इन आदेशों का पहिला स्वर पीछे के व्यञ्जन के साथ मिलता है; जैसा

ए + अ, आ, इ० = अय, अया इ०। ओ + अ, आ, इ० = अव, अवा इ०।
ऐ + अ, आ, इ० = आय, आया इ०। औ + अ, आ, इ० = आव, आवा इ०।

उदाहरण

शे + अन = शयन,　　नै + अक = नायक
गो + उत्साह = गवुत्साह,　　पौ + अक = पावक

८ पाठ

व्यञ्जन सन्धि।

प्र० व्यञ्जनों की सन्धि के नियम और उदाहरण अलग २ कहिये?

उ० सुनो ॥ १ ॥ प्रथम नियम (क्, च्, ट्, प्,) इनके परे कोई स्वर अथवा वर्ग का तीसरा वा चौथा वर्ण वा य्, र्, ल्, व्, ह् इनमें से कोई आवे तो क्रम से अपने २ वर्ग के तीसरे ग्, ज्, ड्, ब् वर्ण में बदल जाते हैं; जैसा वाक् + ईश = वागीश, दिक् + भाग = दिग्भाग, अप् + जा = अब्ज, षट् + रिपु = षड्रिपु, अच् + आदि = अजादि, अच् + अन्त = अजन्त इ० ॥

॥ २ ॥ त्, द्, के आगे च्, छ्, आवे, तो त् और द् के स्थान में च् आदेश; ज्, झ्, होवे तो ज्; ट्, ठ्, आवे तो ट्; ड्, ढ्, हों तो ड् आदेश होते हैं; जैसा शरत् + चन्द्र मण्डल = शरच्चन्द्र मण्डल, महत् + चक्र = महच्चक्र, महद् + छत्र = महच्छत्र, तत् + टीका = तट्टीका, उद् + डान = उड्डान, सत् + जन = सज्जन इ० ॥

॥ ३ ॥ न् के परे ज् वा झ् आवे तो ञ्; और ड् वा ढ् आवे तो ण् आदेश होते हैं; जैसा महान् + जय = महाञ्जय, महान् + डमरु = महाण्डमरु इ० ॥

॥ ४ ॥ न् के पीछे च् वा ज् होवे तो न् को ञ् आदेश होता है; जैसा याच् + ना = याच्ञा, यज् + न = यज्ञ इ० ॥

॥ ५ ॥ त्, थ्, के पूर्व [illegible] ष होवे तो ट्, ठ् आदेश क्रम से होते हैं जैसा आकृष् + त = आकृष्ट, षष् + [illegible] = षष्ठ इ० ॥

॥ ६ ॥ त्, द्, वा न्, के परे ल्, आवे तो उनके स्थान में ल् आदेश होता है, और न के पूर्वाक्षरके सिर पर ऐसा ँ चन्द्र बिन्दु लिखते हैं; जैसा तत् + लीला = तल्लीला, महान् + लाभः = महाँल्लाभः इ० ॥

॥ ७ ॥ त्, द्, वा न्, इनके आगे श् होवे तो श् की जगह में छ् और त् वा द् के स्थान में च्, और न् के स्थान में ञ् आदेश होतेहैं; जैसा सत् + शास्त्र = सच्छास्त्र, तद् + शरीर = तच्छरीर, धावन् + शशः = धावञ्छशः इ० ॥

॥ ८ ॥ वर्गों के पञ्चम वर्ण को छोड़कर बाकीजो वर्णहैं, उनके आगे ह्

आवे तो पूर्व वर्ण के वर्ग का चौथा वर्ण विकल्प से ह् कारके स्थान में होता है; जैसा ॥

वाक् + हरि ग् घ् = वाग्घरि अथवा वाग्हरि
अच् + हल ज् झ् = अज्झल् वा अज्हल्
षट् + हृदय ड् ढ् = षड्ढृदय वा षड् हृदय
तत् + हवि द् ध् = तद्धवि वा तद् हवि
अप् + हरण ब् भ् = अब्भरण वा अब् हरण

॥ ९ ॥ म् के परे अन्तस्थ वर्ण वा ऊष्म वर्ण आवे तो म् अनुस्वार में बदल जाता है; जैसा सम + योग = संयोग इ० ॥

॥ १० ॥ म् के आगे स्पर्श वर्ण होवे तो म् विकल्प से अनुस्वार अथवा उत्तर व्यञ्जन के वर्ग के अनुनासिक वर्ण में बदल जाता है जैसा सम् + कल्प = संकल्प वा सङ्कल्प- मृत्यु म् + जय = मृत्युंजय वा मृत्युञ्जय इत्यादि ॥

॥ ११ ॥ अनुस्वार के आगे कवर्गादि वर्ण होवे तो उसी वर्ण के वर्ग का अन्त्य वर्ण विकल्प से आदेश होता है; जैसा सं + गत = सङ्गत, सं + ग्राम = संग्राम, सं + धि = सन्धि, सं + पात = सम्पात इ० ॥ कभी २ संगत, संङ्ग्राम, संधि, संपात ऐसा भी लिखते हैं ॥

॥ १२ ॥ त् के आगे कोई स्वर अथवा ग् घ्, द् ध्, ब् भ्, य् र्, व् ह्, इनमें से कोई आवे तो द् में बदल जाता है; जैसा जगत् + आदि = जगदादि: भवत् + दर्शन = भवद्दर्शन, तत् + भय = तद्भय, महत् + भाग्य = महद्भाग्य, तत् + गत = तद्गत, इत्यादि ॥

॥ १३ ॥ वर्गों के, प्रथम वर्णों के आगे न्, म इनमें से कोई वर्ण होवे तो पूर्व वर्ण को अपने वर्ग का तीसरा या अन्त्य वर्ण आदेश विकल्प से होगा, अय मात्र परे होवे तो अन्त्य वर्ण नित्य होगा; जैसा वाक् + मन = वाङ्मन वा वाग्मन, षट् + मास = षड्मास, या षण्मास तत् + नेत्र = तन्नेत्र वा तद्नेत्र, तत् + मय = तन्मय, तत् + मात्र = तन्मात्र इत्यादि ॥

॥ १४ ॥ छ् से पूर्व स्वर होवे तो छ को पूर्व में च् आगम होता है; जैसा आ + छादन = आच्छादन, आगम मित्रवत् + अवयव रूपी होता है॥

॥ १५ ॥ विसर्ग के आगे च्, छ्, ट्, ठ्, त्, थ्, आवें तो क्रमसे श् ष् स् आदेश विकल्प से होते हैं; जैसा निः + शेष = निश्शेष, निः + संशय = निस्संशय, निः + चय = निश्चय, निः + पंक = निष्पंक, कः + ट = कष्ट इत्यादि । कभी २ निःशेष, निःसंशय ऐसा लिखते हैं॥

॥ १६ ॥ विसर्ग के पूर्व अ होवे, और वर्ग का तीसरा चौथा या पांचवां वर्ण वा य् र् ल् व् ह् इन में से कोई वर्ण उसके आगे आवे, तो अ सहित विसर्ग के स्थान में ओ आदेश होता है; जैसा मनः + भाव = मनोभाव; तेजः + मय = तेजोमय इ०॥

॥ १७ ॥ अ और आ को छोड़ कर शेष स्वरोंमें से कोई स्वर विसर्ग के पीछे आवे और उसके परे कोई स्वर अथवा वर्ग का तीसरा चौथा वा पांचवां वर्ण और य र ल व ह इनमें से कोई वर्ण रहे, तो विसर्ग को र् आदेश होता है; जैसा निः + धन, = निर्धन, दुः + नीत = दुर्नीत इत्यादि॥

जो र् परक आवे तो पूर्व र का लोप होकर उससे पीछे का स्वर दीर्घ होता है; जैसा, निर् + रस, = नीरस, निर् + रोगी = नीरोगी + इत्यादि॥

॥ १८ ॥ ऋ ॠ र् ष् इनसे आगे न होवे अथवा इन के बीच में स्वर कवर्ग, पवर्ग, अनुस्वार और य् व् ह् इनमें से कोई एक वा दो तीन वर्ण आवें तो भी न को ण आदेश होता है; जैसा विस्तीर् + न = विस्तीर्ण, विकीर् + न = विकीर्ण, भर् + अन = भरण, पोष् + अन = पोषण, अर्प + अन = अर्पण, इत्यादि इन शब्दों को भाषा में अपभ्रंश से विस्तीर्न, विकीर्न, भरन, पोषन, अर्पन, ऐसा नकारोच्चारण से बोलते हैं॥

\+ मित्र के समान नजदीक रहता है॥

\+ ये शब्द हिन्दी में प्रायः ह्रस्व लिखे जाते हैं यथा निरस, निरोगी॥

१ पाठ

शब्द विचार

शब्दों के प्रकार ॥

प्र० शब्द विचार किसे कहते हैं ?

उ० शब्दों की जाति, साधन, व्युत्पत्ति और दूसरे शब्दों के साथ उनका सम्बन्ध इनके विवेचन को शब्द विचार कहते हैं ॥

प्र० शब्द किसे कहते हैं ?

उ० मुख से निकला हुआ सार्थ ध्वनि अर्थात् जिसका अर्थ होवे, उसे शब्द कहते हैं और वह लिखा हुआ भी शब्द कहाता है, सार्थक कहने से अनर्थक शब्द अर्थात् अर्थ रहित ध्वनि इस व्याकरण में के काम है ॥

प्र० शब्द कितने प्रकार के हैं ?

उ० शब्द दो प्रकार के हैं सिद्ध और साधित ॥

प्र० सिद्ध शब्द किसे कहते हैं ?

उ० जो दूसरे शब्द से न बना हो वह सिद्ध शब्द जैसा घोड़ा, बैल, गाय; संस्कृत शब्द बहुत से अपभ्रंश होकर हिन्दी में आये हैं इसकारण से सिद्ध शब्द बहुत कम हैं ॥

प्र० साधित शब्द किसे कहते हैं ?

उ० जो दूसरे शब्द से बने हैं वे साधित शब्द हैं जैसा, शास्त्री, विद्यार्थी, शिक्षक इत्यादि ॥ सामासिक साधित शब्द का एक भेद है; वह दो वा अधिक शब्दों के योग से होता है; जैसा चक्रपाणि, पीताम्बर इत्यादि ॥

प्र० व्याकरण में साधन क्रिया से शब्दों के मुख्य भेद कितने हैं ?

उ० दो भेद हैं सविभक्तिक और अविभक्तिक ॥

प्र० सविभक्तिक किसको कहते हैं ?

उ० जिन शब्दों से विभक्त्यादि कार्य होते हैं वे सविभक्तिक कहलाते हैं; जैसा घोड़ा, अच्छा, मैं, करता है इत्यादि ॥

प्र० अविभक्तिक किसको कहते हैं ?

उ० जिन शब्दों से विभक्त्यादि कार्य नहीं होते हैं उनको अवि-भक्तिक वा अव्यय कहते हैं; जैसा उधर, और कहां, जहां इत्यादि ॥

प्र० सविभक्तिक और अविभक्तिकों के और कोई भेद होवें तो कहिये?

उ० हिन्दी भाषा में शब्दों के आठ प्रकार हैं, सविभक्तिकमें चार जैसा नाम, सर्वनाम, विशेषण, क्रियापद और अविभक्तिक में चार हैं क्रिया विशेषण, शब्द योगी, उभयान्वयी, उद्गार वाची ॥

प्र० नाम किसे कहते हैं ?

उ० पदार्थ मात्र की संज्ञा को नाम कहते हैं; जैसा घोड़ा, बैल, मनुष्य, क्रोध इत्यादि+ ॥

प्र० सर्वनाम किसे कहते हैं ?

उ० नाम को एक बार कहकर फिर उसकी जगह जो शब्द आता है, उसे सर्वनाम कहते हैं; जैसा मोहनलाल आया, और उसने कहा ॥

प्र० विशेषण किसे कहते हैं ?

उ० जो शब्द पदार्थ का गुण वा धर्म बतावे उसे विशेषण कहते हैं; जैसा सुन्दर घोड़ा, मोटा पानी, चतुर पुरुष, दो बैल इत्यादि ॥

प्र० क्रिया पद किसे कहते ?

उ० कृति वा स्थिति वा अनुभव इत्यादि व्यापार बोधक शब्द को क्रिया पद कहते हैं; जैसा करता है, सोया, गया, आता है, मारा गया इत्यादि ॥

प्र० क्रिया विशेषण अव्यय किसे कहते हैं ?

उ० क्रियाके गुण वा प्रकार बोधक शब्दों को क्रिया विशेषण कहते हैं; जैसा शीघ्र जाता है, सुन्दर लिखता है, झट पट चलता है ॥

प्र० शब्द योगी अव्यय किसे कहते हैं ?

उ० जिसका प्रयोग नाम वाचक के साथ होता है और उसीका सम्बन्ध दूसरे की तरफ बताता है, उसे शब्द योगी जानो जैसा ऊपर, आगे, पीछे इत्यादि ॥

+ सब पदार्थ द्रव्य वा जाति जिनकी स्थिति या कल्पना है जैसी कल्पना करते हैं, उनकी संज्ञा को नाम कहते हैं ॥

प्र० उभयान्वयी अव्यय किनको कहते हैं ?

उ० जिस शब्द का योग दो शब्दों में वा दो वाक्यों में होवे उसे उभयान्वयी जानो; जैसा परंतु, और, तथापि, वा इत्यादि ॥

प्र० केवल प्रयोगी किसे कहते हैं ?

उ० जिससे उनके हर्ष दुःखादि विकारों का बोध हो उसे केवल प्रयोगी वा उद्गारवाचक कहते हैं; जैसा वाह वा, छः, धिक्, हर हर इत्यादि ॥

२ पाठ

नाम विचार ॥

नाम के प्रकार ॥

प्र० नाम कितने प्रकार के हैं ?

उ० नाम तीनप्रकारके हैं सामान्य नाम, विशेषनाम, भाववाचकनाम ॥

प्र० सामान्य नाम किसे कहते हैं ?

उ० जिस नाम से वस्तुओं के समूह में से कोई जाति धर्म विशिष्ट व्यक्ति समझीजाय उसे सामान्य नाम जानो जैसा घोड़ा, हाथी, मनुष्य, इत्यादि ॥

प्र० विशेष नाम किसे कहते हैं ॥

उ० जिस नाम से जाति के गुण का बोध न होकर केवल व्यक्ति मात्र का बोध हो उसे विशेष नाम कहते हैं; जैसा देवदत्त, गंगा, यमुना, कर्णाटक इत्यादि ॥

प्र० भाववाचक नाम किसे कहते हैं ?

उ० पदार्थ का धर्म अर्थात् गुण वा कोई व्यापार जिससे पायाजाय उसे भाव वाचक नाम कहते हैं, जैसा औदार्य्य, समझ, मार, मनुष्यत्व, चातुर्य्य इत्यादि ॥

प्र० नाम से और कुछ समझा जाता है वा नहीं ?

उ० हां लिङ्ग, वचन, और कारक समझे जाते हैं ॥

३ पाठ

लिङ्ग विचार ।

प्र० लिङ्ग किसे कहते हैं ?

उ० लिङ्ग चिन्ह को कहते हैं अर्थात् सजीव, वा निर्जीव, पदार्थ पुरुष वाचक या स्त्री वाचक है यह पहचानने का चिन्ह ।

प्र० लिङ्ग कितने हैं ।

उ० पुंलिङ्ग और स्त्री लिङ्ग ये दो लिङ्ग हैं, नपुन्सक लिङ्ग तीसरा अन्य भाषा में आता है, हिन्दी भाषा में नहीं आता ।

प्र० पुंलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग किसे कहते हैं ?

उ० जिस नामसे पुरुषत्व का बोध होय उसे पुंलिङ्ग कहते हैं, जैसा घोड़ा, गधा, गाड़ा, सोंटा इत्यादि ।

जिस नाम से स्त्रीत्व का बोध होय वह, स्त्रीलिङ्ग; जैसा घोड़ी, भैंस, खाट, कृपा, गाड़ी, घड़ी इत्यादि ।

प्र० प्राणि वाचक पदार्थों का लिङ्ग भेद शीघ्र समझ में आता है, पर अप्राणि वाचक पदार्थों का लिङ्ग किस रीति से समझना चाहिये ?

उ० लिङ्ग का निर्णय तो बहुत कठिन है, परंतु इस विषय में कुछ नियम लिखता हूं ।

॥ १ ॥ संस्कृत में जो शब्द पुंलिङ्ग और नपुन्सक लिङ्ग हैं वे हिन्दी में बहुधा पुंलिङ्ग होते हैं जैसा सागर, रत्न, जल, मुख; रत्न और जल और मुख संस्कृत में नपुन्सक लिङ्गी हैं । जो शब्द संस्कृत में स्त्री लिङ्ग हैं वे हिन्दी में भी प्रायः स्त्रीलिङ्ग होते हैं जैसा कृपा, माया, गति, बुद्धि इत्यादि ।

॥ २ ॥ अकारान्त नाम जिसका उपान्त्य वर्ण त् न होय और आकारान्त हिन्दी नाम प्रायः पुंलिङ्ग हैं; जैसा विघ्न, पत्थर, बेल, घोड़ा, लड़का, कपड़ा इ० ।

॥ ३ ॥ जिन शब्दों के अन्त में ई वा त होवे वे प्रायः स्त्रीलिङ्ग हैं

परंतु घी, पानी, जी, दही इत्यादि शब्द छोड़ कर; जैसा घोड़ा, टोपी, कुरसी, हवेली, रात, बात इत्यादि ॥

॥ ४ ॥ जिस नाम के अन्त में **आवट** वा **आहट** प्रत्यय हो वह सदा स्त्री लिङ्ग जानो; जैसा सजावट, बनावट, घबराहट इत्यादि ॥

॥ ५ ॥ सामासिक शब्दों का लिङ्ग निर्णय बहुधा अंत्य शब्द के लिङ्गानुसार होताहै, और बहुब्रीहि समास में अन्य पदार्थवत् लिङ्ग होगा ॥ जैसा दयानिधि यह पुंल्लिङ्ग है, क्योंकि निधि शब्द पुंल्लिङ्ग है ॥ इसी तरह से भूल दया उपकार बुद्धि ये स्त्रीलिङ्ग हैं कुमति पुरुष अर्थात् जिस की मति खराब है ऐसा पुरुष यहां कुमति यह विशेषण पुंल्लिङ्ग है कुमति स्त्री, यहां कुमति यह विशेषण स्त्री लिङ्ग है ॥

---

४ पाठ

पुंल्लिङ्ग नाम से स्त्रीलिङ्ग नाम बनाने की रीति ॥

प्र० पुंल्लिङ्ग शब्द से स्त्रीलिङ्ग किस प्रकार से बनताहै ?

उ० ॥ १ ॥ प्राणि वाचक अकारान्त और आकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्द के अंत्याक्षर के स्थान में **ई** आदेश होने से स्त्रीलिङ्ग होताहै; जैसा देव, देवी; दास, दासी; लड़का, लड़की; घोड़ा, घोड़ी इत्यादि ॥

॥ २ ॥ कहीं २ **इया** आदेश होताहै वहां अंत्याक्षर द्वित्व होवे तो एक व्यञ्जन का लोप होजाताहै जैसा बुड्ढा, बुढ़िया; लट्टू, लठिया; कुत्ता, कुतिया इत्यादि ॥

॥ ३ ॥ व्यापार करने वाले पुरुष वाची अकारान्त वा आकारान्त वा ईकारान्त शब्द अंत्याक्षर को **अन** वा **इन** आदेश करने से स्त्रीलिङ्ग होतेहैं ॥

पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग		पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	
सोनार	सोनारिन,	सोनारन	कसेरा	कसेरिन,	कसेरन
लोहार	लोहारिन,	लोहारन	ठठेरा	ठठेरिन,	ठठेरन
कलवार	कलवारिन,	कलवारन	तेली	तेलिन,	तेलन
माली	मालिन,	मालन	धोबी	धोबिन,	धोबन

॥ ४ ॥ ब्राह्मणों के उपनाम वाची शब्दों को स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिये अंत्यस्वर को **आइन** आदेश विकल्प से करके आदि अक्षर केस्वर को ह्रस्व कर देते हैं पर ए ओ को ह्रस्व नहीं होता, एक पक्ष में **अन** आदेश होता है ॥

पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
मिसर	मिसराइन, मिसरन	तिवारी	तिवारन, तिवारिन
दुबे	दुबाइन, दुबन	ओझा	ओझन
पांडे	पंडाइन, पांडन	चौबे	चौबन

॥ ५ ॥ पुंलिङ्ग शब्द के अंत्य वर्ण को **अन आयन तायन** और **आनी** ये आदेश होने से कभी २ स्त्रीलिङ्ग होते हैं; जैसा

पुंलिङ्ग	आदेश	स्त्रीलिङ्ग	पुंलिङ्ग	आदेश	स्त्रीलिङ्ग
कुंजड़ा	अन	कुंजड़न	नायक	अन	नायकन
कवि	तायन	कवितायन	खत्री	आयन	खतरायन
				आनी	खतरानी
पण्डित	आनी	पण्डितानी	मेहतर	आनी	मेहतरानी
	आयन	पण्डितायन			

॥ ६ ॥ कई पुंलिङ्ग शब्दों का स्त्रीलिङ्ग भिन्न शब्दों से होता है जैसा

पुं०	स्त्री०	पुं०	स्त्री०	पुं०	स्त्री०
भाई	बहिन	पुरुष	स्त्री	पिता	माता
बाप	मा	राजा	रानी	मर्द	औरत
		बैल	गाय	नर	मादी

भाषा में हर एक नाम का लिङ्ग जानना बहुत कठिन है, इसलिये यह ध्यान में रखना चाहिये कि जिस नाम का लिङ्ग ज्ञात न होय उसका प्रयोग स्त्रीलिङ्ग में करने से पुंलिङ्ग में करना उचित है ॥

५ पाठ

वचन का वर्णन ॥

प्र० वचन किसे कहते हैं और वे कितने हैं ?

उ० वचन संख्या को कहते हैं; वे दो हैं **एकवचन और बहुवचन** नामके जिस रूप से एक का बोध हो उसे एक वचन और जिस से एकसे अधिक का बोध हो उसे बहुवचन कहते हैं; जैसा लड़का, घोड़ा एक वचन, लड़के, घोड़े बहुवचन ॥

प्र० नाम का बहुवचन किसरीति से बनता है ?

उ० आकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्द के अंत्य **आ** के स्थान में ए आदेश करने से बहुवचन होताहै; जैसा एकवचन बहुवचन, ए-व ब-व . ए-व ब-व-

घोड़ा घोड़े मोटा मोटे दण्डा दण्डे

गधा गधे कोठा कोठे लड़का लड़केइ०॥

शेष पुंल्लिङ्ग शब्दोंके एक वचन और बहुवचन के रूप एक से होते हैं; जैसा मर्द, पर्वत, माल, साधु इत्यादि ॥

सम्बन्धवाचक आकारान्त और इतर कई एक आकारान्त शब्द एक वचन और बहुवचन में समान रूप होते हैं जैसा काका, पिता, माता, सोदा, दर्या, दाना, दाता इत्यादि ॥

स्त्रीलिङ्ग इकारान्त, ईकारान्त, उकारान्त और ऊकारान्त शब्दों को छोड़ कर बाक़ी शब्दों के अंत्यस्वर के स्थान में अनुनासिक एं आदेश करने से बहुवचन होता है; जैसा

एकवचन, बहुवचन—ए—व— ब—व— ए—व— ब—व

औरत. औरतें किताब किताबें तलवार तलवारें इत्यादि ॥

इकारान्त और ईकारान्त शब्दों के आगे **आं** प्रत्यय करके ईकारको ह्रस्व करने से बहुवचन होता है; जैसा ॥

घोड़ी, घोड़ियां बकरी बकरियां, बुद्धि बुद्धियां इत्यादि ॥

आकारान्त स्त्रीलिङ्गी शब्दों के अंत्य **आ** पर प्रायः अनुस्वार देनेसे बहु-

वचन होता है; जैसा एकवचन बहुवचन ए-व- ब-व-
गैय्या गैय्यां, भैंसिया, भैंसियां इत्यादि ॥

बहुत से नामों के एक वचन और बहुवचन के रूप समान होते है इसलिये अनेकत्व का बोध करने के वास्ते लोग, गण, जाति इत्यादि बहुत्व वाचक शब्द नाम के साथ आते हैं जैसा चाकर लोग, देवगण, पशु जाति इ० ।

६ पाठ

विभक्ति और कारक विचार ॥

प्र० कारक और विभक्ति किनको कहते हैं ?

उ० क्रिया का सम्बन्ध जिस नाम वाचक शब्द में हो उसे कारक कहते हैं; और क्रिया और कारक का सम्बन्ध जिस रूपसे ज्ञात होवे उसको विभक्ति कहते हैं; और सम्बन्ध बोधक अक्षरों को विभक्ति प्रत्यय कहते हैं ॥

प्र० कारक कौन २ हैं ?

उ० कारक छः हैं, कर्त्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, अधिकरण, इनका वर्णन आगे किया है ॥

प्र० विभक्तियां कितनी हैं ?

उ० ये विभक्तियां सात हैं, प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी, और सप्तमी, ॥

प्र० विभक्ति प्रत्यय कौन २ हैं और उनकी योजना कैसी होती है ?

उ०

विभक्ति का नाम	प्रत्यय	विभक्ति का नाम	प्रत्यय
१ प्रथमा	०	५ पञ्चमी	से
२ द्वितीया	को	६ षष्ठी	का, की, के
३ तृतीया	ने, से	७ सप्तमी	में, पै, पर
४ चतुर्थी	को	८ सम्बोधन	०

प्रथमा विभक्ति में नाम से कुछ प्रत्यय नहीं होता जो मूल रूप है वही रहता है; प्रथमा के एक वचन का रूप और कभी २ बहुवचन का रूप दोनों तुल्य होते हैं ॥

इतर विभक्तियों में प्रत्यय होते हैं; ये नाम वाचक के मूल रूप से या उस रूप में कुछ विकार होकर आगे जोड़े जाते हैं, जिस रूप से प्रत्यय जोड़े जाते हैं उसको **सामान्य** रूप कहते हैं, जैसा लड़का, लड़के को, लड़कों को, यहां लड़के और लड़कों ये लड़का शब्द के क्रम से एक वचन और बहुवचन सामान्य रूप हैं; द्वितीया आदि विभक्तियों में और सम्बोधन में इतना भेद है कि सम्बोधन में प्रत्यय नहीं है और अय, अरे, हे इत्यादि शब्द नाम के पूर्व लगाते हैं। विभक्ति प्रत्ययों का योग करना विभक्ति कार्य कहलाता है।

प्र० प्रथमादि छः कारक और सम्बन्ध बोधक षष्ठी इनका पृथक् २ लक्षण कहिये ?

उ० क्रिया को जो करे उसे **कर्त्ता** कहते हैं; जैसा **देवदत्त** जाता है।

क्रिया का फल जिस पर रहे उसे **कर्म** जानो; जैसे **देवदत्त** किताब को पढ़ता है।

क्रिया का साधन अर्थात् जिसके द्वारा क्रिया की जावे उसे **करण** समझो; जैसा **राम** ने रावण को **बाण** से मारा, यहां बाण करण है।

जिसको कुछ दिया जावे या जिसके निमित्त कुछ दिया जावे उसे **संप्रदान** कहते हैं; जैसा मोहनलाल **गरीबों** को खाने को देता है।

जिससे वियोग किया जावे उसे अपादान कहते हैं; जैसा बाजार से लाया है।

षष्ठी का अर्थ सम्बन्ध है, वह दो पदार्थों पर रहता है, एक कृत सम्बन्धी दूसरा सम्बन्धी। कृतसम्बन्धी से षष्ठी के प्रत्यय **का की के** होते हैं; सम्बन्धी पुँल्लिङ्ग एकवचन होतो कृत सम्बन्धी के आगे का; स्त्रीलिङ्ग हो तो की, पुँल्लिङ्ग बहुवचन हो तो के लगाते हैं, कृत सम्बन्धी सम्बन्धी का विशेषण होता है, उसका क्रिया में अन्वय नहीं होता, इसलिये षष्ठी कारक में नहीं ली; जैसा **राजा का घोड़ा, राजा की घोड़ी, राजा के घोड़े** इत्यादि।

सप्तमी का अर्थ अधिकरण अर्थात् आधार होता है; जैसा श्रीकृष्ण घरमें है, गोपाल घोड़े पे बैठकर गया है इत्यादि ॥

सम्बोधन=सम्मुखी करण अर्थात् किसी को चिता कर अपने सम्मुख करना, सम्बोधन के बोधक हे, अरे, अय, इत्यादि अव्यय नाम के पूर्व लगते हैं, जैसा हेराम मेरा दुःख दूरकर, अरे मोहन, अय कृपाकर, इनका अधीन कारक विचार में अच्छी तरह से किया जायगा ॥

प्र० नाम से विभक्ति कार्य कैसा होता है यह मेरे ध्यान में अच्छी तरह से नहीं आया इसलिये उदाहरण देकर मुझे समझाइये?

उ० विभक्ति कार्य अच्छी तरह से समझ में आवे इसलिये पुंलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग नामों के विभक्ति कार्यके विषय में पृथक् २ नियम लिखता हूं ॥

---

७ पाठ

पुंलिङ्ग नाम ॥

इननामों के दो भाग किये हैं १ एक आकारान्त पुंलिङ्ग नाम; २ दूसरा आकारान्त पुंलिङ्ग नामों को छोड़ शेष पुंलिङ्ग नाम ॥

नियम ॥

१ आकारान्त पुंलिङ्ग नाम के अन्त्य **आ** को **ए** आदेश करने से प्रथमा का बहुवचन और एक वचन सामान्य रूप और सम्बोधन के एक वचन का रूप बनता है; अंत्य **आ** को **ओं** आदेश करने से बहुवचन सामान्य रूप, होता है, और सम्बोधन के बहुवचन में ओ आदेश होता है; सामान्य रूप के आगे प्रत्यय जोड़े जाते हैं ॥

२ अब शिष्ट पुंलिङ्ग नामों की प्रथमा के बहु वचन का रूप और एक वचन सामान्य रूप प्रथमा के एक वचन के रूपवत् होते हैं, द्वितीयादि विभक्तियों के बहुवचन में अंत्यवर्ण के आगे **ओं** आगम करके बहुवचन सामान्य रूप बनता है, सम्बोधन में केवल **ओ** आगम किया जाता है ॥ सामान्य रूप के आगे प्रत्यय जोड़ते हैं ॥

प्रथम नियम का उदाहरण ॥

आकारान्त पुंलिङ्ग लड़का शब्द ॥

विभक्ति	एक वचन	बहुवचन
प्रथमा	१ लड़का	लड़के
द्वितीया	२ लड़के को	लड़कों को
तृतीया	३ लड़के ने - से	लड़कों ने - से
चतुर्थी	४ लड़के को	लड़कों को
पञ्चमी	५ लड़के से	लड़कों से
षष्ठी	६ लड़के का - की - के	लड़कों का - की - के
सप्तमी	७ लड़के में - पै - पर	लड़कों में - पै - पर
सम्बोधन	८ अय लड़के	अय लड़को

इसी रीति से आगे लिखे हुये नामों को छोड़ शेष सब आकारान्त पुंलिङ्ग नामों का विभक्ति कार्य जानो ॥

अपवाद—आकारान्त पुंलिङ्ग विशेषनाम, सम्बन्ध वाचक नाम, और संस्कृत शब्द ये पूर्वोक्त नियम के अपवाद हैं; इनका विभक्ति कार्य दूसरे नियम से होता है; जैसा, मोहना, रामा, भैय्या, काका, मामा, दाता, कर्त्ता इत्यादि ॥

	एक वचन	बहुवचन
प्रथमा	१ भैय्या	भैय्या
द्वितीया	२ भैय्या को	भैय्याओं को
तृतीया	३ भैय्या ने - से	भैय्याओं ने - से
चतुर्थी	४ भैय्या को	भैय्याओं को
पञ्चमी	५ भैय्या से	भैय्याओं से
षष्ठी	६ भैय्या का - की - के	भैय्याओं का - की - के
सप्तमी	७ भैय्या में-पै-पर	भैय्याओं में-पै-पर
सम्बोधन	अय भैय्या	अय भैय्याओ

द्वितीय नियम के उदाहरण ॥

अकारान्त पुंलिङ्ग—नाम +

द्वितीयादि विभक्तियोंके बहुवचन में अंत्य अ को ओं आदेश करके प्रत्यय जोड़ते हैं, सम्बोधन के बहुवचन में अंत्य अ को ओ आदेश किया जाता है ।

अकारान्त पुंलिङ्ग बालक शब्द ॥

	एक वचन	बहुवचन
प्र०	१ बालक	बालक
द्वि०	२ बालक को	बालकों को
तृ०	३ बालक ने - से	बालकों ने - से
च०	४ बालक को	बालकों को
पं०	५ बालक से	बालकों से
ष०	६ बालक का-की-के	बालकों का-की-के
स०	७ बालक में-पे-पर	बालकों में-पे-पर
सं	८ हे बालक	हे बालको

इसी प्रकार तालाब, मालिक, पालक, वृक्ष, पर्वत इत्यादि जानो ॥

इकारान्त औ ईकारान्त पुंल्लिङ्ग नाम ॥

इकारान्त पुंल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग शब्द शुद्ध हिन्दी नहीं हैं, पर जो हिन्दी में हैं वे संस्कृत से आये हैं; द्वितीयादि विभक्तियों के बहुवचन में अंत्य वर्णसे आगे यों आगम करते हैं सम्बोधन के बहुवचन में यो होता है, और अंत्यवर्ण दीर्घ ई होवे तो उसे ह्रस्व करते हैं ।

इकारान्त पुंल्लिङ्ग कवि शब्द ॥

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	१ कवि	कवि
द्वि०	२ कवि को	कवियों को

+ धन, मन, बालक आदि शब्दों का उच्चारण कुछ हलन्त सा किया करते हैं पर इनके अंत्य अक्षर के नीचे हलन्त का चिन्ह नहीं लगाते हैं और ये शब्द संस्कृत में बराबर अकारान्त हैं इसलिये यहां भी अकारान्त माना है ।

तृ०	३ कवि ने, से	कवियों ने, से
च०	४ कवि को	कवियों को
पं०	५ कवि से	कवियों से
ष०	६ कवि का—की—के	कवियों का—की—के
स०	७ कवि में — पै— पर	कवियों में — पै—पर
सं०	८ हे कवि	हे कवियो

इसी तरह से हरि, रवि, पति इत्यादि जानो ॥

ईकारान्त पुंल्लिङ्ग माली शब्द ॥ +

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन	विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
१	माली	माली	५	माली से	मालियों से
२	मालीको	मालियों को	६	मालीका-की-के	मालियों का-की-के
३	मालीने-से	मालियोंने-से	७	मालीमें-पै-पर	मालियों में-पै-पर
४	मालीको	मालियों को	८	हे माली	हे मालियो

इसी तरह से धोबी, तेली, धनी इत्यादि जानो ॥

उकारान्त पुंल्लिङ्ग साधु शब्द ॥

१	साधु	साधु	५	साधु से	साधुओं से
२	साधु को	साधुओं को	६	साधु का-की-के	साधुओं-का-की-के
३	साधुने-से	साधुओंने-से	७	साधुमें-पै-पर	साधुओंमें-पै-पर
४	साधु को	साधुओंको	८	अयसाधु	अयसाधुओ

इसी तरह से भानु, प्रभु आदि जानो ॥

ऊकारान्त पुंल्लिङ्ग भालू शब्द ॥

ऊकारान्त, के बहुवचन सामान्य रूप में अंत्य ऊ को ह्रस्व होजाता है ॥

१	भालू	भालू	३	भालूने-से	भालुओंने-से
२	भालू को	भालुओंको	४	भालूको	भालुओंको

+ कोई २ लोग द्वितीया आदि विभक्तियों के बहुवचन में ईकारान्त पुंल्लिङ्ग के रूप यों के बदले ओं धारण करके बनाते हैं जैसा मालिओं को मालिओं से-से इ० ॥

५ भालु से	भालुओं से	७	भालुमें-पै-पर	भालुओंमें-पै-पर
६ भालुका-की-के	भालुओं का-की-के	८	अयभालु	अयभालुओ

एकारान्त पुंल्लिङ्ग नाम ॥

१	चोबे	चोबे	६	चोबेका-की-के	चोबेओं का-की-के
२।४	चोबे को	चोबेओंको	७	चोबेमें-पै-पर	चोबेओंमें-पै-पर
३।५	चोबेने, से	चोबेओंने, से	८	अयचोबे	अयचोबेओ

इसी प्रकार पांड़े आदि शब्द जानो, और ऐ, ओ, औ, ये जिनके अन्त में हैं ऐसे शब्द हिन्दी भाषा [illegible] नहीं हैं ॥

---

८ पाठ

स्त्रीलिङ्ग नाम ॥

प्रथमा के बहुवचन को छोड़कर शेष विभक्तियों में स्त्रीलिङ्ग नामों का विभक्ति कार्य जो पुंलिङ्ग नाम आकारान्त नहीं हैं उनके समान होता है, स्त्रीलिङ्ग नामों के भी दो गण मान लिये हैं ॥

१ इकारान्त और ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग नाम ॥

२ शेष स्त्रीलिङ्ग नाम ॥

१ नियम ॥

इकारान्त और ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग नामों के अंत्य इ और ई को इयां आदेश करने से प्रथमा के बहुवचन का रूप बनता है, शेष रूप पुंलिङ्ग इकारान्त और ईकारान्त नामों के सदृश होते हैं ॥

२ नियम ॥

इकारान्त और ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग नामों को छोड़के शेष स्त्रीलिङ्ग नामों में से कई नामों के अंत्य अक्षर को एं आदेश करने से प्रथमा के बहुवचन का रूप सिद्ध होता है, और कई नामों के प्रथमा के एकवचन और बहुवचन समान होते हैं ॥

उदाहरण १

इकारान्त स्त्रीलिङ्ग बुद्धि शब्द ॥

विभक्ति	एक वचन	बहु वचन	विभक्ति	एक वचन	बहु वचन
प्र०१	बुद्धि	बुद्धियां	पं०५	बुद्धि से	बुद्धियों से
द्वि०२	बुद्धि को	बुद्धियों को	ष०६	बुद्धिका-की-के	बुद्धियोंका-की-के
तृ०३	बुद्धिने-से	बुद्धियोंने-से	स०७	बुद्धि में-पै-पर	बुद्धियोंमें-पै-पर
च०४	बुद्धि को	बुद्धियों को	सं०८	हे बुद्धि	हे बुद्धियो

इसी तरह मति आदि शब्द जानो ॥

ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग घोड़ी शब्द ॥

१	घोड़ी	घोड़ियां	६	घोड़ी का-की-के	घोड़ियों का-की-के
२ । ४	घोड़ी को	घोड़ियों को	७	घोड़ी में-पै-पर	घोड़ियों में -पै-पर
३ । ५	घोड़ीने-से	घोड़ियोंने-से	८	अय घोड़ी	अय घोड़ियो

२ गणनियम और उदाहरण ॥

अकारान्त स्त्रीलिङ्ग नाम के अंत्य अक्षर को एं आदेश करने से प्रथमा के बहुवचन का रूप सिद्ध होता है, और शेष रूप अकारान्त पुंल्लिङ्गवत् ॥

अकारान्त स्त्रीलिङ्ग बात शब्द ॥

विभ-	एक वचन	बहु वचन	वि-	एक वचन	बहु वचन
१	बात	बातें	५	बात से	बातों से
२	बात को	बातों को	६	बात का-की-के	बातों का-की-के
३	बातने-से	बातोंने-से	७	बातमें-पै-पर	बातोंमें-पै-पर
४	बात को	बातों को	८	हे बात	हे बातो

इसी तरह किताब, चील, रात आदि जानो ॥

आकारान्त स्त्रीलिङ्ग नाम के अंत्य आ के शिर पर अनुस्वार देने से प्रथमा के बहुवचन का रूप होता है, शेष रूप मुख्य नियम से बनते हैं ॥

आकारान्त स्त्रीलिङ्ग नाम के रूप ॥

विभ-	एक वचन	बहु वचन	वि-	एक वचन	बहु वचन
१	गैय्या	गैय्यां	२।४	गैय्या को	गैय्याओं को

३।५	गैय्याने-से	गैय्याओंने-से	७	गैय्यामें-पे-पर	गैय्याओंमें-पे-पर
६	गैय्याका-की-के	गैय्याओंका-की-के	८	हे गैय्या	हे गैय्याओ

उकारान्त स्त्रीलिङ्ग नाम के रूप			ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग नाम के रूप		
१	धेनु	धेनु	१	झाड़ू	झाड़ू
२।४	धेनुको	धेनुओंको	२।४	झाड़ूको	झाड़ूओंको
३।५	धेनुने-से	धेनुओंने-से	३।५	झाड़ूने-से	झाड़ूओंने-से
६	धेनुका-की-के	धेनुओंका-की-के	६	झाड़ूका-की-के	झाड़ूओंका-की-के
७	धेनुमें-पे पर	धेनुओंमें-पे-पर	७	झाड़ूमें-पे-पर	झाड़ूओंमें-पे-पर
८	हे धेनु	हे धेनुओ	८	हे झाड़ू	हे झाड़ूओ

गौ शब्द की प्रथमा का बहुवचन **गौएं** होता है। ऋकारान्त शब्द प्रायः स्त्रीलिङ्ग में नहीं आता॥

---

९ पाठ

सर्वनाम विचार॥

पुरुष वाचक सर्व नाम॥

प्र० सर्व नाम किसे कहते हैं ?

उ० नाम को एक बार कहकर फिर उसके कहने का प्रयोजन पड़े तो उसकी जगह जो शब्द आते हैं, उन्हें **सर्वनाम** कहते हैं; इससे बारम्बार नाम को कहने का काम नहीं पड़ता, और सर्व नामों की जगह आता है, इसलिये सर्व नाम यह सार्थक संज्ञा रक्खी गई है॥ सर्वनामों को नामवत् लिङ्ग वचन और विभक्ति कार्य्य होता है। पर लिङ्गभेद से उनके रूपों में कुछ भेद नहीं होता नाम के अनुरोध से सर्व नाम का लिङ्ग बूझा जाता है॥

प्र० सर्वनाम कितने प्रकार के हैं ?

उ० सर्व नाम पांच प्रकार के हैं; **पुरुषवाचक, दर्शक, सम्बन्धी, प्रश्नवाचक, सामान्य॥**

पुरुष वाचक सर्व नाम ॥

प्र० पुरुष वाचक सर्व नाम किसे कहते हैं ?

उ० मैं तू वह ये पुरुष वाचक सर्वनाम हैं, मैं यह अपने का वाचक बोलने वाले को बताता है, इसलिये उसे प्रथम पुरुष कहते हैं; तू यह जिसको बोलता है उसे बतलाता है, इस कारण से उसे द्वितीय पुरुष कहते हैं; और वह उक्त दोनों को छोड़ तीसरे का बोधकरता है, इस से उसे तृतीय पुरुष कहते हैं ॥

प्र० पुरुष वाचक सर्वनामों के रूप वचन भेद से कैसे होते हैं ?

उ० इनके रूप पुंलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग में एक से होते हैं पर वचनों में बदलते हैं ।

पुंलिङ्ग स्त्रीलिङ्ग		पुंलिङ्ग स्त्रीलिङ्ग		पुंलिङ्ग स्त्रीलिङ्ग	
एक वचन	बहुवचन	एक वचन	ब-व-	ए-व-	ब-व-
मैं	हम	तू	तुम	वह	वे

प्र० प्रथम पुरुष सर्वनाम की कारक रचनामें रूपकिसप्रकारसे होतेहैं ?

उ० प्रथमा के एक वचन में **मैं** और बहु वचन में **हम** होता है, और षष्ठी को छोड़ द्वितीयादि विभक्तियों के एक वचन में **मुझ** और बहु वचन में **हम** आदेश होकर आगे प्रत्यय जोड़ते हैं, द्वितीया और चतुर्थी के एक वचन में ए बहुवचन में एं प्रत्यय विकल्प से करके **मुझ** और **हम** सामान्य रूपों के अन्त्य अकार का लोप होता है, तृतीया का ने प्रत्यय लगे तो मुझ आदेश न होगा मूल रूपों से जोड़ा जाता है, षष्ठी के एकवचन में प्रकृति को मे आदेश और का की के प्रत्ययों को रा री रे + आदेश क्रम से करते हैं बहुवचन में **हम** के अन्त्य अ को दीर्घ करते हैं, सर्व नामों का सम्बोधन नहीं होता ॥

+ षष्ठी के प्रत्यय रा री रे केवल प्रथम और द्वितीय पुरुष वाचक सर्व नामों के होते हैं॥ और रा री रे भिन्न भिन्न वाचक आप शब्द के होते हैं। इन रूपों की योजना रा री रे प्रत्ययान्त रूपों से समान होती है॥

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
१	मैं	हम
२	मुझको, मुझे	हमको, हमें
३	मैंने, मुझ से	हमने, हमसे, हमोंसे
४	मुझको, मुझे	हमको, हमें
५	मुझे	हमसे
६	मेरा, मेरी, मेरे	हमारा, हमारी, हमारे
७	मुझमें, पै, पर	हममें, पै, पर

प्र० द्वितीय पुरुष वाचक सर्वनाम के रूप कैसे बनते हैं ?

उ० प्रथमा के एक वचन में तू बहुवचन में तुम होते हैं, द्वितीयादि विभक्तियों के एक वचन में तुझ और बहुवचन में तुम आदेश होतेहैं, पर षष्ठी के एक वचन में ते और बहुवचन में तुम्ह आदेशहोते हैं, आदेशों के आगे प्रत्ययों का योग किया जाता है शेष कार्य पूर्ववत् ॥

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
१	तू	तुम
२ । ४	तुझको, तुझे	तुमको, तुम्हें
३	तूने, तुझसे	तुमने, तुमसे
५	तुझ से	तुम से
६	तेरा, तेरी, तेरे	तुम्हारा, तुम्हारी, तुम्हारे
७	तुझ में	तुम में

प्र० तृतीय पुरुष के रूप किस प्रकार से होते हैं ॥

उ० प्रथमा के एक वचन में वह बहु वचन में वे होते हैं, शेष विभक्तियों के एकवचन में उस बहुवचन में उन वा उन्हों आदेश करके प्रत्यय जोड़ते हैं द्वितीया और चतुर्थी में कभी २ प्रत्ययों को ए वा एं आदेश पूर्ववत् करते हैं और बहुवचन में प्रकृति को उन आदेश करते हैं ॥

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
१	वह	वे
२।४	उसको, उसे	उनको, उन्होंको, उन्हें
३	उसने, उस से	उनसे, उन्होंसे, उनने, उन्होंने
५	उससे	उनसे, उन्होंसे
६	उसका, उसकी, उसके	उनका, उन्होंका, की-के
७	उनमें, पै-पर	उनमें, उन्होंमें, पै-पर

द्वितीय पुरुष और तृतीय पुरुष वाचक सर्व नामों के आदरार्थ में आप आदेश करके विभक्तियां लगाते हैं और इस के रूप बहुवचन में होते हैं; जैसा १ आप २।४ आपको ३।५ आपने, से ६ आपका-की-के ७ आपमें-पै-पर ॥

आदरार्थक आप शब्द के साथ लोग शब्द का प्रयोग यथार्थ बहुत्व बताने के लिये करते हैं; जैसा आप लोगों का यह बात उचित है, आप लोगों में इत्यादि ॥

कभी २ आप इस सर्व नाम का प्रयोग तीनों पुरुषों में किया जाता है; तब वह शब्द निज का वाचक होता है इसलिये उसे सामान्य सर्व नाम कहना उचित है, उसके रूप ऐसे होते हैं कि एक वचन और बहु वचन में १ आप २।४ आपको आपने-को ३।५ अपने से, आपसे ६ अपना-नी-ने ७ आप में, अपने में, वह अपने घर को चला; मैं अपने बाप से कहता था, तुम अपने भाई से कहना ॥ आपस यह परस्पर बोधक है इससे प्रायः षष्ठी और सप्तमी विभक्तियों के प्रत्यय होते हैं जैसा आपस का-की-के आपस में, जैसा तुम लोग आपस में क्यों झगड़ा करते हो ॥

---

१० पाठ

दर्शक सर्व नाम ॥

प्र० दर्शक सर्वनाम किसे कहते हैं और उनसे विभक्ति कार्य कैसा होता है ?

उ० वह और यह दर्शक सर्व नाम कहलाते हैं, वह दूरकी वस्तु को बतलाता है और यह समीप की वस्तु को; वह के रूप तो लिख आये हैं, यह के रूप प्रथमा के एक वचन में यह बहु वचन में ये होता है, शेष विभक्तियों के एक वचन में इस बहुवचन में इन इन्हों इन्ह आदेश विकल्प से कर के प्रत्यय जोड़ते हैं ।

विभक्ति	एक वचन	बहु वचन
१	यह	ये
२।४	इसको, इसे	इनको, इन्होंको, इन्हें
३।५	इसने, इससे	इनने, इन्होंसे, इनसे
६	इसका-की-के	इनका, इन्हों का-की-के
७	इसमें-पे-पर	इनमें, इन्होंमें-पे-पर

---

११ पाठ.

सम्बन्धी सर्व नाम ॥

प्र० सम्बन्धी सर्व नाम किसे कहते हैं ?

उ० जो या जौन इसे सम्बन्धी सर्व नाम कहते हैं, क्योंकि जहां इसका प्रयोग होवे वहां सो वा तौन इस दर्शक सर्व नाम का प्रयोग करना अवश्य पड़ता है, वैय्याकरण लोग जो सो और वह इनको वा इनसे बने हुए शब्दों को परस्पर नित्य सम्बन्धी कहते हैं; जैसा जो कोई आयाथा सो अच्छा था, जिसने यह काम किया है उसे इनाम दो, जैसा करोगे वैसा फल पाओगे ॥

प्र० सम्बन्धी सर्व नाम के रूप कैसे होते हैं ?

उ० प्रथमा के एक वचन में और बहु वचन में जो ऐसाही रहता है शेष विभक्तियों के एक वचन में जिस बहुवचन में जिन या जिन्ह वा जिन्हों आदेश पूर्ववत् होते हैं, और सो के रूप द्वितीयादि विभक्तियों के एक वचन में तिस बहु वचन में तिन वा तिन्ह वा तिन्हों आदेश होते हैं; आदेशों के आगे प्रत्यय जोड़े जाते हैं; शेष पूर्ववत् ॥

विभक्ति	एक वचन	बहु वचन
१	जो, जौन	जो, जौन
२।४	जिसको, जिसे	जिनको, जिन्होंको, जिन्हें
३	जिसने, से	जिनने, जिन्होंने, से
५	जिससे	जिनसे, जिन्हों से
६	जिसका-की-के	जिनका, जिन्होंका-की-के
७	जिसमें, पै-पर	जिन में, जिन्हों में-पै-पर
१	सो तौन	सो तौन
२।४	तिसको, तिसे	तिनको, तिन्होंको, तिन्हें
३।५	तिसने-से	तिनने-तिन्होंने-से
६	तिसका-की-के	तिनका- तिन्होंका-की-के
७	तिसमें-पै-पर	तिनमें-तिन्होंमें-पै-पर

१२ पाठ

प्रश्नार्थक सर्वनाम

प्र० प्रश्नार्थक सर्वनाम किसे कहते हैं और उन के रूप कैसे होतेहैं?

उ० **कौन** और **क्या** ये प्रश्न के लिये आते हैं इस वास्ते प्रश्नार्थक सर्वनाम कहाते हैं। केवल **कौन** शब्द सामान्यतः मनुष्य को और **क्या** अप्राणि वाचक को लगाते हैं; पर नाम के साथ आवे तो दोनों प्राणि वाचक और अप्राणि वाचक को लगाते हैं; जैसा किस तरह से; क्या दाना आदमी; किसका घोड़ा ? मेरा; क्या है ? चीज़।

कौन शब्द को द्वितीयादि विभक्तियों के एक वचन में **किस** बहुवचन में **किन किन्ह** वा **किन्हों** आदेश करके आगे प्रत्यय का योग होताहै, शेष पूर्ववत् जानो।

विभक्ति	एकवचन	बहु वचन
१	कौन	कौन
२।४	किसको, किसे	किनको, किन्होंको, किन्हें

३।४	किसने, किससे	किनने, किन्होंने, से
६	किसका-की-के	किनका-किन्होंका-की-के
७	किसमें-पै-पर	किनमें-किन्होंमें-पै-पर

क्या इसके रूप दोनों वचन में एकसेही होते हैं द्वितीयादि विभक्तियों में काहे आदेश होकर आगे प्रत्यय जोड़े जाते हैं जैसे १ क्या २।४ काहे को ३।५ काहेसे-ने ६ काहेका-की-के, काहे-में-पै-पर ॥

---

१३ पाठ

सामान्य सर्वनाम ।

प्र०—सामान्य सर्वनाम किसे कहते हैं और कैसा प्रयोग होता है ?

उ०—कोई, कुछ, आप ये सामान्य सर्वनाम हैं; इनमेंसे केवल कोई इस का प्रयोग मनुष्य वाचक में होता; और कुछ का सामान्य पदार्थ मात्र में; पर नाम के पीछे विशेषण के सदृश आवें, तो प्राणि वाचक और अप्राणि वाचक में उनका प्रयोग किया जाता है; जैसा किसी को दो, किसी नगर में, कुछ पानी दो, कुछ लोग इत्यादि ॥

प्र०—इनको विभक्ति प्रत्यय लगाने से कैसे रूप होते हैं ?

उ०—आप के रूपतो पुरुष वाचकों में लिख आये हैं, बाकी दोके ऐसे होते हैं कि कोई द्वितीयादि विभक्तियों में किसी आदेश और कुछ को किस् आदेश होते हैं और दोनों वचनों में एक से रूप बनते+; जैसे १ कोई २।४ किसी को ३।५ किसीने-से, ६ किसी का-की-के, ७ किसी में-पै-पर ॥ १ कुछ २।४ किस्को ३।५ किस्नें-से ६ किस् का-की-के ७ किस् में-पै-पर ॥

प्र०—और कोई शब्द सामान्य सर्वनाम होवे तो कहिये ?

+ कोई २ कहते हैं कि कोई रूप सामान्य सर्वनामके रूप द्वितीया आदि विभक्तियों में बहुवचन में नहीं हैं पर ऐसे वाक्य में देखो, हमारी पाठशाला की परीक्षा हुई तब किसी २ विद्यार्थियों ने अच्छे २ जवाब दिये, यहां स्पष्ट है कि किसी २ [illegible] है इसलिये बहुवचन है किसी रूप को द्विरुक्त करके आगे [illegible] बहुवचनवाचक [illegible] है ॥

प्र० एक २ सप्तक दोनों और सब इनमें विभक्ति प्रत्यय होते हैं; द्वितीयादि विभक्तियों के बहुवचन में सब शब्द के ब को भ आदेश विकल्प से करते हैं जैसा सबोंने कहा या सभोंने कहा, सभों को दो

कई सामान्य सर्वनाम हैं, कई को विभक्ति प्रत्यय नहीं जोड़े जाते, पर कई एक इस संयुक्त पद को विभक्ति कार्य होता है यदि इस पद का अर्थ बहुत्व बोधक हो तो भी बहुवचन सामान्य रूप नहीं होता अर्थात् एक शब्द के प्रत्ययों का योग होता है; जैसा कई एक को मैंने देखा कई एकों को नहीं बोलते ॥

---

१४ पाठ

सर्व नामों के विषय में—स्फुट विचार ॥

प्र० नाम के साथ सर्वनामों की योजना किस प्रकार से होती है?

उ० नाम के पीछे सर्वनाम विशेषण के रूप से आवे तो यह नियम है कि विभक्ति प्रत्यय नाम से जोड़ देते हैं सर्वनाम से नहीं, नाम प्रथमान्त होवे तो सर्वनाम भी प्रथमान्त रहता है, नाम अन्य विभक्ति में होवे तो सर्वनाम का सामान्य रूप पीछे आता है, नाम के वचनानुसार सर्वनाम का वचन रहता है; जैसा क्या, तुम होशयार मनुष्य ऐसे कसे, यह बात मैंने सुनी, कौन जानवर है, कोई सरकारी नोकर रहता है, मुझ गरीब को धर्म दो, उस लड़के का हाथ टूट गया, मुझ निर्बुद्धि को इतना यश मिला यही बहुत है इत्यादि ॥

प्र० बहुवचन में द्वितीयादि विभक्तियों के दो २ रूप जो लिखे हैं उनके अर्थ में कुछ भेद होवे तो कहिये ?

उ० ओकारान्त सामान्य रूप से जो रूप बनते हैं वे सदा बहुत्व बतलाते हैं, इन्हों को, उन्हों को, इत्यादि ॥ अन्य रूप कभी २ आदरार्थ

+ कोई २ कहते हैं कि कई यह पदार्थक ऐसा शब्द है । पर यह अर्थ मूल में नहीं आता [illegible] लिखते हैं ॥

बहु वचन में आते हैं हमको, हमें, तुमको इत्यादि । उक्त सर्वनामों का परिगणन कोष्ठक में पृथक् २ लिखता हूं ।

पुरुषवाचक सर्वनाम	दर्शकसर्वनाम	सम्बन्धी सर्वनाम	प्रश्नार्थक सर्वनाम	सामान्य सर्वनाम	ये मुख्य हैं ।
मैं, तू, आप	यह, वह, सो, तौन	जो, जौन	कौन, क्या	कोई, कुछ, आप	
0	0	0	0	0	इनमें से बहुत से अन्य स-
0	0	0	0	एक दूसरा	र्वनाम वाचक के योग
0	0	0	0	दोनों और	से भी सर्वनाम और
0	0	0	0	बाजे, बहुत	विशेषण बनते हैं; जै-
0	0	0	0	सब, हर, फ	सा कोई कुछ जो कोई, दू
0	0	0	0	लाना, कई	सरा कोई, हर एक इ०
0	ऐसा, वैसा,	जैसा	कैसा	कैसा ही	प्रकारार्थबोधक; ऐसा,
0	तैसा			कितना ही	जैसा, इत्यादि इन्हीं
0	इतना, ए-	जितना,	कितना		के स को तना और
0	ता, उतना,	जिता,	किता		ता आदेश करने से
0	उता, तित-				बनते हैं । ये परिमा-
0	ना, तित्त				णबोधक कहाते हैं ।

इनमें से प्रकारार्थ वा परिमाणार्थ वा दूसरा, फलाना, बाजे, इनको स्त्रीलिङ्ग करना हो तो अन्त्य वर्ण को ई आदेश करते हैं जैसा ऐसा, ऐसी इत्यादि और बहुधा सर्वनाम शब्द विशेषण भी होते हैं ।

१५ पाठ

विशेषण विचार ।

प्र० विशेषण किसे कहते हैं ?

उ० जिस शब्द से नाम का गुण वा अर्थ समझ पड़े उसे विशेषण

कहते हैं; जैसा भले शील मनुष्य, होशयार लड़का इत्यादि। यहां भले शील और होशयार विशेषण हैं। विशेषण को नाम के सदृश, लिङ्ग वचन और विभक्तियां होती हैं।

प्र० विशेषण कितने प्रकार के हैं?

उ० गुण वाचक और संख्या वाचक ये विशेषण के दो प्रकार हैं; जैसा अच्छा, बुरा, नमकीना इत्यादि। ये गुण वाचक विशेषण हैं। पदार्थ का संख्या रूप गुण जिससे समझा जाय वह संख्या वाचक विशेषण होता है; जैसा एक, दो, तीन इत्यादि।

प्र० विशेष्य किसे कहते हैं?

उ० जिस नाम का गुण विशेषण बोधित करे वह नाम विशेषण का विशेष्य होता है; जैसा काला घोड़ा, एक घोड़ा, यहां घोड़े का काला और एक विशेषण हैं और विशेषण बोधित विशेषता अर्थात् कालापन और एकत्व घोड़े में है, इसलिये घोड़ा यह नाम विशेष्य है। हिन्दी भाषा में विशेष्य के लिङ्ग वचनानुसार विशेषण के लिङ्ग वचन होते हैं और विशेषण विशेष्य के पहिले रहता है; जैसा काला घोड़ा, काली घोड़ियां।

गुण विशेषण॥

प्र० गुण विशेषण किसे कहते हैं और उसके रूप लिङ्ग और वचन में कैसे होते हैं?

उ० जिसमें केवल गुण पाया जाय वही गुण विशेषण है। उनमें आकारान्त विशेषणों को छोड़ बाकी विशेषणों के रूप विशेष्य के लिङ्ग वचन और विभक्ति के अनुसार नहीं बदलते हैं; जैसा सुन्दर मर्द, सुन्दर औरत, सुन्दर लड़का, सुन्दर लड़के इत्यादि॥

प्र० आकारान्त विशेषण की योजना कैसी होती है?

उ० विशेषण का रूप नाम के लिङ्ग वचन और विभक्ति के अनुसार होता है अर्थात् विशेष्य पुंल्लिङ्ग और प्रथमा के एक वचन में होवे तो, विशेषण आकारान्त ही रहता है, विशेष्य पुंल्लिङ्ग और प्रथमा के बहु वचन में हो या द्वितीयादि विभक्त्यन्त अथवा [illegible] होवे तो, विशेषण

के अंत्य अक्षर को ए आदेश होता है विशेष्य स्त्रीलिङ्ग होवे तो विशेषण के अन्त्य आ को ई आदेश होता है; जैसा कालाघोड़ा, काले घोड़े, कालेघोड़े को, कालेघोड़ों पर, कालीघोड़ी, वा काली घोड़ियां, अच्छे लड़के इत्यादि ॥

प्र० विशेषण विभक्ति का योग किस प्रकार से होता है ?

उ० जब विशेषण तद्गुण विशिष्ट नामवाचक के लिये आते हैं तब उनको नामके समान विभक्ति लिङ्ग वचन लगते हैं। विशेषण आकारान्त होवे तो आकारान्त नामवत् ईकारान्तादिकों को ईकारान्तादि नामवत् विभक्ति कार्य होता है ॥

पुंल्लिङ्ग भला शब्द ॥

वि०	एकवचन	बहुवचन	वि०	एकवचन	बहुवचन
१	भला	भले	६	भलेका-की-के	भलोंका-की-के
२।४	भलेको	भलोंको	७	भलेमें-पै-पर	भलोंमें-पै-पर
३।५	भलेने-से	भलोंने-से	८	हेभले	हेभलो

स्त्रीलिङ्ग भली शब्द ॥

वि०	एकवचन	बहुवचन	वि०	एकवचन	बहुवचन
१	भली	भली	६	भलीका-की-के	भलियोंका-की-के
२।४	भलीको	भलियोंको	७	भलीमें-पै-पर	भलियों में-पै-पर
३।५	भलीने-से	भलियोंने-से	८	हेभली	हेभलियो

तद्गुण विशिष्ट अकारान्त सुन्दर शब्द ॥

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन	विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
१	सुन्दर	सुन्दर	६	सुन्दरका-की-के	सुन्दरोंका-की-के
२।४	सुन्दरको	सुन्दरोंको	७	सुन्दरमें-पै-पर	सुन्दरों में-पै-पर
३।५	सुन्दरने-से	सुन्दरोंने-से	८	हेसुन्दर	हेसुन्दरो

इसी तरह और विशेषण जानो ॥

---

१६ पाठ

उत्तमावाचिक और विशेषणों का न्यून और अधिक भाव ॥

प्र० सादृश्यार्थक प्रत्यय किन २ शब्दोंसे होते हैं ?

उ० सादृश्यवाचक और विशेषता बोधक सा प्रत्यय का योग नाम, सर्वनाम, और विशेषण के आगे किया करते हैं विशेषण के साथ यह प्रत्यय आवे तो कभी २ अर्थ न्यूनत्व बनाता है जैसा तेरी कुतिया सी कुतिया, मेरी सी आंखें, छोटासा घर; इत्यादि । सांत शब्द को आकारान्त विशेषण के समान लिङ्ग वचनादि कार्य होता है ।

प्र० किस पदार्थ में दूसरे से वा सब सजातीय पदार्थों से गुणाधिक्य वा गुण न्यूनत्व होवे तो किस प्रकार से बतलाना चाहिये ?

उ० यह गुणाधिक्य बताने के लिये विशेषण को कुछ कार्य नहीं होता, पर जिसके साथ तुलना की जावे उस नाम को पञ्चमी का प्रत्यय से जोड़ा जाता है, और सब सजातियों से तुलना होवे तो उस नाम के पीछे सब यह शब्द लगादेते हैं; यह नियम हिन्दी में साधारण है, पर कभी२ संस्कृत की रीति के अनुसार विशेषण को तर और तम प्रत्यय जोड़के पूर्वोक्त कार्य करते हैं; जैसा मोहन लाल सुन्दर लाल से बुद्धिमान है, विद्या द्रव्य से अच्छी चीज़ है, हमारी घोड़ी तुम्हारी घोड़ी से चालाक है, हिमालय पर्वत सब पर्वतों से ऊंचा है, गणपति अपने सब साथियों से होशियार है, पुण्य-पुण्यतर-पुण्यतम । प्रिय-प्रियतर-प्रियतम इत्यादि ।

॥ सप्तम पाठ ॥

संख्या विशेषण

प्र० संख्या विशेषण किसे कहते हैं और उसके रूप कैसे होते हैं ?

उ० संख्या जिस से बोधित होवे उसे संख्या वाचक कहते हैं; जैसा एक, दो, तीन इत्यादि । इन शब्दों का प्रयोग विशेष्य के साथ किया जावे तो रूप में कुछ भेद नहीं होता; जैसा एक मर्द को वा औरत को, दो तीन मर्दों ने इत्यादि । दो संख्या वाचक से विभक्ति का योग किया जावे तो ऐसे रूप होते हैं; जैसा १ दोनों २।४ दोनोंको ३ दोनोंने ५ दोनों से ६ दोनोंका-की-के ७ दोनोंमें-पै-पर ८ हे दोनों-गणमेंसे कोई दो व्यक्तियां

जावें तो वहां केवल जो इस रूप को विभक्ति प्रत्यय जोड़ते हैं जैसा दोनों-ने-से इ० । बाकी एक तीन चार इ० । अकारान्त वा आकारान्त इकारान्त ईकारान्त संख्या वाचकों के विभक्तियों का योग करते हैं तब उकारान्त नाम के सदृश रूप होते हैं और कई एक संख्या, विशेषण समूह वाचक विशेषण हैं जैसा गंडा, कोड़ी, सैकड़ा इत्यादि । बहुत्व बताने में विशेष्य के पूर्व संख्या वाचक से ओं जोड़ते हैं, जैसा हज़ारों आदमी लाखों रुपये इत्यादि ।

क्रम वाचक ॥

प्र० क्रमवाचक विशेषण किसे कहते हैं और उसके रूप भेद होते कहिये?

उ० जो विशेषण क्रम बतावे उसे क्रम वाचक विशेषण कहते हैं, जैसा पहिला, दूसरा, हज़ारवां यहां सात से आगे संख्या वाचक को वां वीं वें आगम करने से क्रम वाचक बन जाता है, और एक से छः तक पहिला, दूसरा, तीसरा, चौथा, पांचवां, छठवां, छठा इत्यादि आदेश होते हैं, और इन से लिङ्ग वचन और विभक्ति का योग करना हो तो आकारान्त विशेषण के समान रूप होते हैं, जैसा दसवां लड़का, दसवें लड़के को-से-का-की दसवीं लड़की, दसवीं लड़कियां, दसवीं लड़कियों, दसवीं लड़कियोंको इत्यादि ।

आवृत्ति वाचक ॥

प्र० आवृत्ति वाचक किसे कहते हैं?

उ० संख्या वाचक से गुना प्रत्यय लगाने से और प्रकृति को ह्रस्व यानि लोप वा औकार आदि आदेश करने से आवृत्ति वाचक होते हैं, जैसा

संख्या वाचक दो तीन चार पांच छः इत्यादि ।

आवृत्ति वाचक दुगुना, तिगुना, चौगुना, पचगुना, छगुना इत्यादि ।

संख्या वाचक को बार वा वेर प्रत्यय जोड़ने से भी आवृत्ति वाचक बनजाते हैं । जैसा एक बार, दो बार वा वेर इ० ।

संख्यांश वाचक ॥

प्र० संख्यांश वाचक किसे कहते हैं और वे कौन २ हैं ?

उ० संख्या का अंश अर्थात् भाग प्रदर्शक जो विशेषण उसे संख्यांश वाचक कहते हैं ॥

जैसा पाव, चौथे, चौथाई, तिहाई, आधा, आध, पौन, पौने, सवा, डेढ़, अढ़ाई ॥ कोई संख्या उत्तर अङ्कसे एक चतुर्थांश कम होवे वा अधिक होवे तो पौने, पौन, सवा क्रमसे पीछे आते हैं जैसा पौने दो, सवा दो इत्यादि, और एक द्वितीयांश अधिक होवे तो एकसे डेढ़, दोसे अढ़ाई, तीन आदि से साढ़े तीन साढ़ेचार इत्यादि होते हैं और जब सौ हज़ार लाख इत्याद्यन्त संख्या वाचक के साथ पौने, सवा, साढ़े आते हैं तब सौ हज़ार इत्यादि संख्या का भाग जानो; जैसा पौने दोसौ १७५ सवा दोसौ २२५ साढ़ेतीन सौ ३५० इत्यादि ॥

क्रियापद विचार १९

क्रियापद का लक्षण और उसके भेद ॥

प्र० क्रियापद किसे कहते हैं ?

उ० जिससे कृति वा स्थिति अर्थात् देह और मन के व्यापार का बोध हो उसे क्रिया पद कहते हैं जैसा लिखता है, बोलता है, सोचता है, खाचुका इत्यादि ॥

प्र० क्रियापद किस से बनता है ?

उ० क्रियापद धातुसे बनता है ॥

प्र० धातु किसे कहते हैं ?

उ० क्रिया का मूल अर्थात् प्रत्ययादि कार्य रहित व्यापार बोधक जो शुद्ध रूप है उसे धातु कहते हैं, जैसा गा, सो, बैठ, कर इ० ॥ भाषा वाले इन धातुओं के आगे ना प्रत्यय लगाकर धातु बतलाते हैं, इसमें कुछ हानि नहीं ॥

प्र० धातु कितने प्रकार की हैं ?

उ० धातु दो प्रकार की हैं एक सकर्मक दूसरी अकर्मक ॥

प्र० सकर्मक और अकर्मक क्रियापदों का क्या लक्षण है ?

उ० जिस क्रिया के व्यापार से उत्पन्न फल कर्त्ता से अन्य पदार्थ में जावे वह क्रियापद और उसकी धातु सकर्मक कहाती है, जैसा वह लड़के को पढ़ाता है, और जिस क्रिया के व्यापार का फल कर्त्ताही में रहे उस क्रियापद को और उसकी धातु को अकर्मक कहते हैं, जैसा वह सोता है॥

उदाहरण ॥

सकर्मक क्रियापद	अकर्मक क्रियापद
वह घरको बनाता है	बालमुकुन्द बैठा है
मोहन पोथीलिखता है	कुत्ता भोंकता है
बालक रोटी खाता है	यशदत्त पढ़ता है

क्रियापद सकर्मक है वा अकर्मक है इसका ज्ञान होने की और भी रीति है ॥

१ जिस क्रियापद से **क्या** और **किसको** ऐसा प्रश्न करके उत्तर मिल सके तो वह क्रियापद सकर्मक जानो, जैसा वह खाता है और खिलाता है इस वाक्य में क्या खाता है और किसको खिलाता है ऐसा प्रश्न करने से **रोटी** और **कुत्ते को** इत्यादि ये उत्तर मिलते हैं इसलिये खाता है और खिलाता है ये क्रियापद सकर्मक हैं जिस धातुका प्रयोग सामान्य भूतकाल में किया जावे तो कर्त्ताको तृतीया विभक्ति का प्रत्यय ने लगता है वह धातु सकर्मक जानो जैसा गोविन्दने बैल छोड़ा, रामने रावण को मारा इत्यादि लाना, भूलना, बोलना, समझाना, थकना, ये कहीं २ अपवाद हैं, और जिस क्रियापद से उत्तर न मिले उसे अकर्मक जानो, जैसा सोता है, बैठा है इत्यादि ॥

धातुओं के भेद ॥

प्र० धातुओं के और कौन २ भेद हैं ?

उ० सिद्ध धातु, साधित धातु, और अनुकरण धातु ये तीन भेद हैं; सिद्ध धातुओं का सहाय धातु यह एक भेद है ॥

प्र० सिद्ध धातु किसे कहते हैं ?

उ० जो किसी से न बना होवे वह सिद्ध धातु है; जैसा सो, बैठ, खा, पी इत्यादि ॥ एक धातु के आगे दूसरा धातु आकर मूल धातु का अर्थकाल इत्यादि बतलाता है उसे सहाय्य धातु कहते हैं; जैसा सो गया, पकाता रहता है, करता होगा, पका करता है इत्यादि ॥

प्र० साधित धातु किसे कहते हैं ?

उ० सिद्ध धातु के प्रत्ययादि कार्य करने से जो नया धातु बनता है वह साधित धातु है; जैसा रिझाना, समझाना, खिलावना इ० ॥ इन के दो भेद हैं प्रयोजक, और नाम धातु ॥

प्र० प्रयोजक क्रिया पद किसे कहते हैं ?

उ० जहां क्रिया के मुख्य कर्ता का कोई दूसरा प्रेरक होकर वाक्य में कर्ता होता है वहां वह क्रियापद प्रयोजक जानो ॥ प्रयोजक क्रियापद का यह धर्म है कि मूल धातु अकर्मक होवे, तो सकर्मक हो जाता है अर्थात् अकर्मक क्रिया पद का कर्ता प्रयोजक क्रियापद का कर्म होता है, और मूल धातु सकर्मक होय तो और एक कर्म बढ़जाता है, पर यह कर्म हिन्दी में करण या अपादान रूप से आता है, जैसा अन्न पकता है, और क्रियापद प्रयोजक करने से, वह मनुष्य अन्न पकाता है यहां मनुष्य कर्ता और अन्न कर्म हुए हैं- वह घर बनाता है ॥ प्रयोजक क्रियापद करने से मैं उससे घर बनवाता हूं ॥ प्रयोजक क्रियापद की धातु भी प्रयोजक जानो ॥

प्र० नाम धातु किसे कहते हैं ?

उ० नाम धातु उन धातुओं को कहते हैं, जो कि नाम अथवा विशेषण से बनते हैं; जैसा घोड़ा, घोड़ानाः; तरस, तरसानाः पानी, पनियाना; आधा, अधियाना; ॥

प्र० अनुकरण धातु किसे कहते हैं ?

उ० कार्य सदृश उच्चारण जिस धातु का हो वह अनुकरण धातु कहलाता है जैसा घुरघुराता है इत्यादि ॥

१९ पाठ

क्रियापद के लिङ्ग वचन और पुरुष ॥

प्र० क्रियापद में कौन २ बातें अवश्य हैं?

उ० लिङ्ग, वचन, पुरुष, अर्थ, काल, और प्रयोग अवश्य होते हैं, और इनका ध्यान क्रियापद के रूप से होता है इन भेदों से क्रियापद के रूप प्रायः बदलते हैं ॥

प्र० क्रियापद के लिङ्ग, वचन, और पुरुष कितने हैं ?

उ० दो लिङ्ग पुंलिङ्ग और स्त्री लिङ्ग; दो वचन एक वचन और बहु वचन, तीन पुरुष प्रथम पुरुष, द्वितीय पुरुष, तृतीय पुरुष ॥

पुंलिङ्ग

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
प्रथम पुरुष	मैं करता हूं	हम करते हैं
द्वितीय पुरुष	तू करता है	तुम करते हो
तृतीय पुरुष	वह करता है	वे करते हैं

स्त्री लिङ्ग

प्र०-पु	मैं करती हूं	हम करती हैं
द्वि-पु	तू करती है	तुम करती हो
तृ-पु	वह करतीहै	वे करती हैं

२० पाठ

अर्थ विचार ॥

प्र० क्रियापद का अर्थ समझाइये और उसके भेद बतलाइये ?

उ० कोई क्रिया अथवा व्यापार करने के विषय में बोलने वाले के मन में जो भाव होवे तद्भाव बोधक जो क्रिया पद का रूप उसे अर्थ कहते हैं और वे अर्थ पांच प्रकार के हैं स्वार्थ, आज्ञार्थ, विध्यर्थ, संशयार्थ और सङ्केतार्थ ॥

१ जब कोई बात है वा नहीं इतना बोध क्रियापद से होताहै तब वह क्रियापद स्वार्थ में रहता है जैसा वह करता है, उसनेकाम नहींकिया ॥

२ जब बोलने वाला **आज्ञा** वा **उपदेश** वा **प्रार्थना** करता
तो उस क्रिया पद को आज्ञार्थ में जानो; जैसा तू काम मत कर;
पने से हलके को कोई काम करने के लिये कहना आज्ञा है और अपने
ड़े से कुछ करने के लिये कहना, प्रार्थना है पर कभी २ दोनों अर्थों में
ियापद के रूप एकसेही आते हैं; जैसा अय राजा मेरा सङ्कट दूर कर,
नी ला, यहां पहिले में प्रार्थना और दूसरे में आज्ञा है ॥

३ आज्ञा का अर्थ गर्भित होकर धर्म, शक्यता, योग्यता, सम्भावना,
शंसा इत्यादि अर्थों का बोध क्रिया पदके रूप से होता है, तब विध्यर्थ
क्रिया पद है ऐसा जानो; जैसा वह काम करे, अर्थात् जो वह काम
रे तो योग्य है; होसके तो कर ॥

४ जिस क्रिया पद से सन्देह का बोध होवे, उसे संशयार्थ कहते हैं,
सा वह गया होगा ॥

५ एक क्रियाकी सिद्धि दूसरी क्रिया पद है तो वह क्रिया सङ्केतार्थ
जानो; जैसा अगर मैं आज तक पाठशाला में पढ़ता तो मेरी बढ़ती
जाती, इस अर्थ को **हेतु हेतु मत्** भी कहते हैं, कभी २ यह अर्थ
मझाने के लिये **अगर तो यदि** इत्यादि अव्ययों की योजना करतेहैं; ॥

२१ पाठ

काल विचार ॥

प्र० काल किसे कहते हैं ?

उ० क्रिया जिस समय में हुई हो उसे काल कहते हैं, और उस का
र्थ क्रिया पद के रूप से होता है ॥

प्र० कालके कितने भेद हैं ?

उ० वर्तमान, भूत, भविष्य ये तीन भेद हैं ॥

प्र० वर्तमान काल किसे कहते हैं ?

उ० जो होरहा है उसे वर्तमान काल कहते हैं जैसा मैं पूजाकरताहूं ॥

प्र० भूतकाल किसे कहते हैं ?

उ० वर्त्तमान काल से पूर्व होगया जो समय उसे भूतकाल कहते हैं जैसा नन्दलाल ने पुस्तक पढ़ी, यह भूतकाल सामान्य भूत, अपूर्ण भूत भूतभूत, वर्त्तमान भूत के भेद से चार प्रकार का है १ जो क्रिया पूर्वकाल में होगई हो और पूर्वकाल का निश्चित ज्ञान न पाया जाय उसे सामान्य भूत कहते हैं, जैसा वह गया, २ भूतकाल में जिस क्रिया की पूर्णता न हो जाय उसे अपूर्ण भूत कहते हैं, जैसा मैं करता था, ३ भूतकाल में क्रिया का प्रारम्भ होकर पूरी होगई होवे तो उसे भूतभूत काल समझो कभी २ जो क्रिया दूसरी भूत क्रिया के पूर्व होगई हो उसका प्रयोग भूत भूतकाल में होता है, जैसा आप के आने के पूर्व वह गया था ४ जो क्रिया भूतकाल में प्रारम्भ होकर वर्त्तमान काल में समाप्त हुई हो उसे वर्त्तमान भूत कहते हैं, जैसा मैंने उसको मारा है, इसे आसन्न भूत भी कहते हैं

प्र० भविष्यत्काल किसे कहते हैं ?

उ० भावी अर्थात् होने वाली क्रिया के समय को भविष्यत्काल कहते हैं जैसा वह जावेगा इ० ॥

---

२२ पाठ

प्रयोग विचार ॥

प्र० प्रयोग किसे कहते हैं ?

उ० हिन्दी में क्रिया पद के लिङ्ग वचन और पुरुष कर्त्ता के अनुसार और कभी २ कर्म के अनुसार होते हैं, और कई एक स्थलों में दोनों के भी अनुरोध से क्रियापद नहीं रहता है । इस क्रियापद में कर्त्ता और कर्म से ऐक्य या भिन्नत्व वाक्य की रचना से बोधित होती है, इस वाक्य रचना के प्रकार को या इस तरह से क्रियापद के विकृत रूप को प्रयोग कहते हैं ॥

प्र० प्रयोग कितने प्रकार के होते हैं ?

उ० कर्त्तरि प्रयोग, कर्म्मणि प्रयोग, भावे प्रयोग, ये तीन प्रकार हैं

प्र० ये प्रयोग किस रीति से जाने जाते हैं और इन के कुछ भेद हों तो कहो ?

उ० जहां कर्त्ता के अनुसार क्रियापद का रूप होता है वहां कर्त्तरि प्रयोग जानो । कर्त्तरि प्रयोग के दो भेद हैं, एक सकर्मक कर्त्तरि और दूसरा अकर्मक कर्त्तरि । जहां क्रियापद सकर्मक होवे, वहां सकर्मक कर्त्तरि प्रयोग होता है और जहां क्रियापद अकर्मक होवे, वहां अकर्मक कर्त्तरि प्रयोग जानो; जैसा लड़का जाता है, लड़के आते हैं, लड़कियां जाती हैं, मैं आता हूं-अकर्मक कर्त्तरि, मोहनलाल ख़त लिखता है, शिव प्रसाद पानी पीता है- सकर्मक कर्त्तरि प्रयोग जानो ।

जहां कर्म के अनुसार क्रियापद हो वहां कर्म्मणि प्रयोग जानो, जैसा रामने सिंहमारा, सिंहिनीमारी, मैंने ख़त भेजा, चिट्ठी लिखी, इत्यादि ।

कर्त्ता और कर्म के अनुसार जहां क्रियापद का रूप नहीं होता केवल सामान्यतः पुंल्लिङ्ग तृतीय पुरुष एक वचन में रहता है अर्थात् जहां क्रिया का भावही कर्त्ता हो वहां भावे प्रयोग जानो; जैसा राम लाल ने सिंह को मारा, राम ने सिंहिनी को मारा, इत्यादि प्रयोगों में क्रियापद का लिङ्ग वचन नहीं बदलता इस लिये ये भावे प्रयोग हैं ॥

प्र० ये प्रयोग किस काल और अर्थ में होते हैं ?

उ० ये प्रयोग, धातु वर्त्तमान काल वाचक और भूतकाल वाचक धातु साधित विशेषणों से बनते हैं ॥

सब अर्थ और काल में अकर्मक धातु और बोल, भूल, ला, बक, समझ इन सकर्मक धातुओं से कर्त्तरि प्रयोग होता है, जैसा वह जावे, रामलाल घरको पहुंचा, वह बोला, मैं यह बात भूला, वह बासन लावेगा इत्यादि ।

धातु और वर्त्तमान काल वाचक धातु साधित विशेषण से जो रूप बनते हैं इनमें सकर्मक धातुओं से कर्त्तरि प्रयोग बनता है; जैसा वह लड़का अपनी मा को बहुत कष्ट देता है, नर्मदा प्रसाद अच्छा बोलता था इ० ।

भूतकाल वाचक धातु साधित विशेषण से जो काल और अर्थ बनते हैं उन में बोल धातु का गण छोड़ सकर्मक धातुओं से कर्मणि और भावे

प्रयोग होते हैं पर इतना ध्यान में रखना चाहिये कि कर्मणि प्रयोग में कर्त्ता तृतीयान्त और कर्म प्रथमान्त, और कर्म के अनुसार क्रियापद रहते हैं; और भावे प्रयोग में कर्त्ता तृतीयान्त, कर्म द्वितीयान्त; और क्रियापद पुंलिङ्ग तृतीय पुरुष एक वचन होते हैं जैसा मैंने चिट्ठी लिखी, कृष्ण ने शेर मारा; उसने बहुत से ढेला ढेले हैं, कर्मणि प्रयोग ॥ कृष्ण ने शेर को मारा, मैंने आप के यहां सेवक को भेजा था- भावे प्रयोग ॥

---

२२ पाठ

क्रिया पद बनाने की रीति ॥

प्र० धातु से क्रियापद किसरीति से बनते हैं ?

उ० हिन्दी भाषा में क्रियापद बहुधा एकही रीति से बन जाते हैं इस विषय में तीन नियम हैं ॥

१ धातु का शुद्ध रूप अर्थात् धातु साधित भाव वाचक नाम का ना गिरा कर जो शेष रहता है वह आज्ञार्थे द्वितीय पुरुष एक वचन का रूप होता है जैसा बोलना से बोल यह आज्ञार्थे द्वितीय पुरुष एकवचन का रूप होता है ॥

२ धातु को **ता** प्रत्यय लगाने से वर्त्तमान काल वाचक धातु साधित विशेषण होता है जैसा बोलता ॥

३ धातु के अन्त वर्णको **आ** मिलाने से भूतकाल वाचक धातु साधित विशेषण होता है; जैसा बोला ॥

धातु के अन्त में **आ ई ऊ ए ओ** होवें तो पूर्वोक्त आकार आदिकों के पीछे य आगम करके ईकार और ऊकार को ह्रस्व करदेते हैं जैसा **खा** लाया, **पी** पिया, **छू** छुआ, **दे** दिया, **रो** रोया, परंतु कई धातुओं के रूप और रीति से होते हैं, जैसा **कर** किया, **जा** गया; **हो** हुआ इत्यादि ॥

इन तीन रूपों से और इनसे **हो** इस सहाय धातु के वर्त्तमान और भूतकाल के रूप जो जोड़कर सब अर्थ और कालों के रूप बन जाते हैं ॥

यह स्मरण रखना चाहिये कि क्रियापद का रूप पुंलिङ्ग एक वचन में आकारान्त होवे, तो अन्त्य आ को बहुवचन में ए स्त्रीलिङ्ग एकवचन में ई और बहु वचन में ईं आदेश होते हैं, यह प्रायः रीति है। जब दो अथवा अधिक रूप स्त्रीलिङ्गी आते हैं तब रूप के अन्त्य ई पर अनुस्वार करदेते हैं; जैसा बैठतीं बैठती थीं।

सहाय धातु है ॥

	वर्त्तमानकाल		भूतकाल	
पुरुष	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
प्र-पु	मैं हूं	हम हैं	मैं था	हम थे
द्वि-पु	तू है	तुम हो	तू था	तुम थे
तृ-पु	वह है	वे हैं	वह था	वे थे
		स्त्री-	मैं थी	हम थीं इ०॥

२४ पाठ

केवल धातु से बने हुए अर्थ और काल।

प्र० शुद्धधातु से कौन २ अर्थ और काल बनते हैं?

उ० शुद्धधातु से हेतुहेतुमद्भविष्यकाल, और आज्ञार्थ के रूप बन जाते हैं।

हेतुहेतुमद्भविष्यकाल ॥

धातु से वक्ष्यमाण प्रत्यय लगाने से हेतुहेतुमद्भविष्यकाल के रूप बन जाते हैं। इसके रूपों में लिङ्ग भेद नहीं होता।

प्रत्यय

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
प्र-	ऊं	एं
द्वि-	ए	ओ
तृ-	ए	एं

जब धातु अकारान्त है तब उसके अंत्य अ के स्थान में ये प्रत्यय आदेश होते हैं; जैसा बोलूं, बोले इ०। धातु के अन्त में आकारादि स्वर

होवे तो ऊं और ओ प्रत्ययों को छोड़ बाकी के प्रत्ययों के पीछे य आगम विकल्प से होता है; जैसा खावे वा खाय ॥

और जब आगम नहीं होता तब ये प्रत्यय धातुओं के आगे जोड़े जाते हैं; कभी २ ए को य आदेश करते हैं; जैसा लावे, लाय, जाय, खाय इ०

धातु एकारान्त हो तो ऊं और ओ को छोड़ शेष प्रत्ययों के पीछे व आगम विकल्प से पूर्वोक्त नियम से होताहै, पर जब आगम नहीं करते हैं तब धातुके एकारके स्थानमें उन प्रत्ययोंको आदेश करतेहैं; जैसा दे धातु

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
देऊं	देवें	दूं	दें
देवे	देवो	दे	दो
देवे	देवें	दे	दें

भविष्यकाल ॥

हेतु हेतु मद्भविष्यकाल बोलूंगी, देऊंगा, दूंगा इ० ॥

आज्ञार्थ ॥

दे, बोल, खा, पी इत्यादि ॥

प्र० वर्तमानकालवाचकधातुसाधित विशेषण से कौन २ काल बनते हैं ?

उ० सङ्केतार्थभूत, वर्तमानकाल, और अपूर्ण भूत ॥

सङ्केतार्थभूत ॥

बोलता, बोलते, बोलती, बोलतीं इ० ॥

वर्तमानकाल ॥

बोलता है, बोलते हैं इत्यादि ॥

अपूर्णभूत ॥

बोलता था, बोलती थी इ० ॥

प्र० भूतकाल वाचक धातुसाधित विशेषणसे कौन २ काल बनते हैं?

उ० सामान्य भूतकाल, वर्तमान भूतकाल, और भूत भूतकाल बनते हैं ॥

सामान्य भूत ॥

बोला, बोली, बोले इत्यादि ॥

वर्त्तमान भूत ॥

बोला है, बोले हैं इत्यादि ॥

भूत भूत ॥

बोलाथा, बोले थे, बोलीथी इ० ॥

प्र० धातु से पूर्वोक्त रूपों के सिवाय और कौन २ रूप बनते हैं?

उ० आदर पूर्वक आज्ञार्थ और भविष्य काल का प्रयोग बनाना हो तो धातु को **इये इयो** वा **इयेगा** ये प्रत्यय लगा देते हैं; आकारान्त धातु हो तो अन्त्य आ के स्थान में इन प्रत्ययों का आदेश करते हैं; धातु के अन्त में ई वा ए हो तो उस धातु को **जिये जियो जियेगा** ये प्रत्यय लगाते हैं; और ए कारको ई में बदलतेहैं, बाकी की धातुओं को इये इत्यादि प्रत्यय लगाते हैं; जैसा लाइये, पीजिये ॥

धातु साधित भाव वाचक नाम ॥

शुद्ध धातु से **ना** प्रत्यय जोड़ने से भाव वाचक नाम होता है और उससे विभक्ति प्रत्यय आकारान्त पुंल्लिङ्ग नामवत् होते हैं; जैसा बोलना, बोलने का, की, को, बोलने में इत्यादि ॥

कर्तृ वाचक धातु साधित नाम ॥

बोलने वाला-बोलनेहारा इत्यादि ॥

धातु साधित विशेषण ॥

बोलता, बोलताहुआ; बोला, बोलाहुआ इत्यादि ॥

धातु साधित अव्यय ॥

जैसा बोल, बोलकर, बोलके, बोलकरके, बोलकरकर इत्यादि-**ता** प्रत्ययान्त वर्त्तमान कालवाचक धातुसाधित विशेषण के **ता** को **ते** आदेशकरके आगे **ही** अव्यय जोड़ने से तत्काल बोधक धातु साधित अव्यय बन जाता है जैसा बोलतेही इत्यादि ॥

२५ पाठ

क्रियापद के रूप ॥

प्र० पूर्व में क्रियापद बनाने के नियम आपने कहे उनके अनुसार बने हुये रूप कहिये ?

उ० क्रियापद के रूप समझ में सुलभ से आवें इसलिये तीन वर्गों में बनाकर लिखता हूं ॥

होना·· अकर्मक ·· ·· ·· ·· ·· ··

हो ·· शुद्धधातु ·· ·· ·· ·· ·· ··

होता·· वर्तमान कालवाचकधातु साधित विशेषण

हुआ·· भूतकालवाचक धातुसाधित विशेषण ··

शुद्ध धातु से बने हुए काल ॥

कर्त्तरि प्रयोग ॥

हेतु हेतुमद्भविष्यकाल——विध्यर्थ वर्त्तमानकाल

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
प्र- पु-	मैंहोऊं-हों	हमहोवें-होयं-हों
द्वि-पु-	तूहोवे-होय-होय-हो	तुमहोवो-हो
तृ-पु-	वह होवे-होय-होय-हो	वे होवें-होयं-हों-होंय

स्वार्थ भविष्य काल ॥

	मैंहोऊंगा-हूंगा	हमहोवेंगे-होयंगे-होंगे
	तूहोवेगा-होयगा-होगा	तुमहोवोगे-होगे
	वहहोवेगा-होयगा-होगा	वेहोवेंगे-होयंगे-होंगे
स्त्री-	मैं होऊंगी-हूंगी	हमहोवेंगी-होयंगी-होंगी-इ०

आज्ञार्थ वर्तमान काल ॥

मैंहोऊं-हों	हम होवें-होयं-हों
तू हो	तुम होवो-हो
वहहोवे-होय-हो	वे होवें-होयं-हों

वर्त्तमान काल वाचक धातु साधित विशेषण से बने हुए काल ॥

कर्त्तरि प्रयोग ॥

कर्त्तार्थ भूतकाल—स्वार्थरीति भूतकाल ॥

पुंल्लिङ्ग

मैं होता	हम होते
तू होता	तुम होते
वह होता	वे होते
स्त्री-मैं होती	हम होतीं- इत्यादि ॥

स्वार्थ वर्त्तमान काल ॥

मैं होता हूं	हम होते हैं
तू होता है	तुम होते हो
वह होता है	वे होते हैं
स्त्री-मैं होती हूं	हम होती हैं-इ० ॥

स्वार्थ अपूर्ण भूत काल ॥

मैं होता था	हम होते थे
तू होता था	तुम होते थे
वह होता था	वे होते थे
स्त्री-मैं होती थी	हम होती थीं इत्यादि ॥

भूतकाल वाचक धातु साधित विशेषणों से बने हुए काल ॥

कर्त्तरि प्रयोग ॥

स्वार्थ सामान्य भूतकाल ॥

मैं हुआ	हम हुए
तू हुआ	तुम हुए
वह हुआ	वे हुए
स्त्री-मैं हुई	हम हुईं इत्यादि ॥

स्वार्थ वर्त्तमान भूतकाल ॥

मैं हुआ हूं	हम हुए हैं

तू हुआ है	तुम हुए हो
वह हुआ है	वे हुए हैं
स्त्री-मैं हुई हूं	हम हुई हैं-इ० ॥

स्वार्थ भूत भूतकाल ॥

मैं हुआ था	हम हुए थे
तू हुआ था	तुम हुए थे
वह हुआ था	वे हुए थे
स्त्री-मैं हुई थी	हम हुई थीं-इ० ॥

आदर पूर्वक आज्ञा क्रिया ॥

हूजिये हूजियो हूजियेगा इत्यादि ॥

धातु साधित नाम ॥

होना·······भाव वाचक होने वाला ॥ होनेहारा······कर्तृवाचक

धातु साधित विशेषण ॥

होता— होता हुआ- स्त्री-होती-होती हुई-	वर्तमानकालवाचक	पुं-हुआ-स्त्री-हुई-भूत काल वाचक ॥

धातु साधित अव्यय ॥

हो - होकर - होके - होकरके-···· समुच्चयार्थक

होतेही ························तत्काल बोधक

शील धातु का गण छोड़ सकर्मक धातुओं का यह धर्म है कि जिन कालों के रूप भूतकाल वाचक धातु साधित विशेषण से बनते हैं, उनमें सकर्मक क्रियापद के कर्त्ता से तृतीया विभक्ति होती है, यह आगे लिखे हुये रूपों से समझ में आवेगा ॥

मारना सकर्मक ॥

मार······शुद्ध धातु

मारता ······वर्तमान काल वाचक धातु साधित विशेषण ॥

मारा······भूतकाल वाचक धातु साधित विशेषण ॥

केवल धातु से बने हुये काल ॥

कर्तरि प्रयोग ।

हेतु हेतु मद्भविष्य काल—विध्यर्थ वर्तमान काल ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
प्र-	मैं मारूं	हम मारें
द्वि-	तू मारे	तुम मारो
तृ-	वह मारे	वे मारें

स्वार्थ भविष्यत्काल ॥

	मैं मारूंगा	हम मारेंगे
	तू मारेगा	तुम मारोगे
	वह मारेगा	वे मारेंगे
स्त्री-	मैं मारूंगी	हम मारेंगी

आज्ञार्थ वर्तमान काल ॥

मैं मारूं	हम मारें
तू मार	तुम मारो
वह मारे	वे मारें

वर्तमान काल वाचक धातु साधित विशेषण से बने हुये काल ॥

संकेतार्थ भूत वा स्वार्थ रीति भूत काल ॥

पुरुष	एकवचन	पुरुष-बहुवचन
	मैं मारता	हम मारते
	तू मारता	तुम मारते
	वह मारता	वे मारते
स्त्री-	मैं मारती	हम मारतीं

स्वार्थ वर्तमान काल ॥

मैं मारता हूं	हम मारते हैं
तू मारता है	तुम मारते हो

वह मारता है | वे मारते हैं
स्त्री- मैं मारती हूं | हम मारती हैं इ०।

स्वार्थ अपूर्ण भूतकाल ॥

मैं मारता था | हम मारते थे
तू मारता था | तुम मारते थे
वह मारता था | वे मारते थे
स्त्री- मैं मारती थी | हम मारती थीं

भूतकाल वाचक धातु साधित विशेषण से बने हुए काल कर्मणि वा भावे प्रयोग।

स्वार्थ सामान्य भूत. काल ॥

पुरुष एकवचन | पुरुष- बहुवचन
मैंने, तूने, उसने } मारा | हमने, तुमने, उन्होंने } मारा

स्वार्थ वर्त्तमान भूतकाल ॥

मैंने, तूने, उसने } मारा है | हमने, तुमने, उन्होंने } मारा है

स्वार्थ भूत भूतकाल ॥

मैंने, तूने, उसने } मारा था | हमने, तुमने, उन्होंने } मारा था

आदर पूर्वक आज्ञार्थ ॥

मारिये ······ मारियो ······ मारियेगा ······ इत्यादि ।

धातु साधित नाम ॥

मारना ··· भाववाचक ··· मारनेवाला ··· मारने वाला ··· कर्तृ वाचक

धातु साधित विशेषण ॥

पुं-मारता-मारता-हुआ स्त्री-मारती-मारती-हुई	वर्त्तमानकालवा-	मारा, मारा हुआ मारी, मारी हुई	भूतकाल वाचक

धातुसाधित अव्यय ॥

मार ..... मारकर .... मारकरके ..... समुच्चयार्थक

मारतेही .... तत्काल बोधक

गिरना अकर्मक धातु ॥

गिर .... शुद्ध धातु

गिरता .... वर्त्तमान कालवाचक धातु साधित विशेषण

गिरा .... भूतकाल वाचक धातुसाधितविशेषण ....

हेतुहेतुमद्भविष्यकाल भविष्यकाल .... आज्ञार्थवर्त्तमानकाल .... संकेतार्थभूतकाल .... वर्त्तमानकाल .... अपूर्णभूतकाल	इस धातु के इन छः कालों के रूप मार धातु के रूपों के सदृश होते हैं ॥

भूतकाल वाचक धातु साधित विशेषण से बने हुए काल

कर्तरिप्रयोग ॥

स्वार्थे सामान्य भूतकाल			स्वार्थे वर्त्तमान भूतकाल	
पुं-एकवचन	पुं-बहुवचन		पुं-एकवचन	पुं-बहुवचन
मैं गिरा	हम गिरे		मैं गिरा हूं	हम गिरे हैं
तू गिरा	तुम गिरे		तू गिरा है	तुम गिरेहो
वह गिरा	वे गिरे		वह गिरा है	वे गिरे हैं
स्त्री-मैं गिरी	हम गिरीं	स्त्री-	मैं गिरी हूं	हम गिरी हैं

स्वार्थभूत भूतकाल ॥

मैं गिरा था	हम गिरे थे	वह गिरा था	वे गिरे थे
तू गिरा था	तुमगिरे थे		

स्त्री-मैं गिरीथी   हमगिरीथीं   शेषरूप मारधातु के सदृश होतेहैं ॥

खाना सकर्मक ॥

मुख्यभाग
- खा ·· ·· शुद्धधातु
- खाता ·· वर्तमानकाल वाचक धातु साधितविशेषण
- खाया ·· भूतकाल वाचक धातु साधित विशेषण

धातु से बने हुये काल ॥

हेतुहेतुमद्भविष्यकाल--विध्यर्थ वर्तमान काल

पुरुष एकवचन	पुरुष बहुवचन
प्र- मैं खाऊं	हम खायं खावें
द्वि- तू खाए खावे खाय	तुम खाओ खावो
तृ- वह खाय खावे खाय	वे खाएं खावें खाय

स्वार्थ भविष्य काल ॥

मैं खाऊंगा	हम खायेंगे खावेंगे
तू खायगा खावेगा	तुम खाओगे खावोगे
वह खायगा खावेगा	वे खायंगे खावेंगे
स्त्री- मैं खाऊंगी	हम खायंगी इ० ॥

आज्ञार्थ वर्तमान ॥

मैं खाऊं	हम खायं खावें
तू खा	तुम खाओ खावो
वह खाय खावे	वे खायं खावें

वर्तमान काल वाचक धातु साधित विशेषण से बने हुए काल ॥

सङ्केतार्थ भूतकाल स्वार्थरीति भूतकाल ॥

पुरुष एक वचन	पुरुष बहु वचन
मैं खाता	हम खाते
तू खाता	तुम खाते
वह खाता	वे खाते
स्त्री- मैं खाती	हम खातीं इ० ॥